



# आरत का राजपत्र

## The Gazette of India

असाधारण

**EXTRAORDINARY**

भाग I—खण्ड 1

PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 184]

No. 184]

नई दिल्ली, शुक्रवार, अगस्त 20, 2004/श्रावण 29, 1926

NEW DELHI, FRIDAY, AUGUST 20, 2004/SRAVANA 29, 1926

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय

(वाणिज्य विभाग)

(पाटनरोधी एवं संबद्ध शुल्क महानिदेशालय)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 20 अगस्त, 2004

**विषय :**—यूरोपीय संघ, कोरिया गणराज्य और सऊदी अरब मूल के अथवा वहाँ से निर्यातित पी वी सी पेस्ट रेजिन के आधारों से संबंधित पाटनरोधी जांच—अंतिम जांच परिणाम।

सं. 14/14/2003/डीजीएडी.—वर्ष 1995 में यथासंशोधित सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 तथा उसकी सीमाशुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं की पहचान, उन पर पाटनरोधी शुल्क का आंकलन एवं संग्रहण और क्षति निर्धारण) नियमावली, 1995, को ध्यान में रखते हुए:

**क. प्रक्रिया:**

1. निम्नलिखित निर्धारित प्रक्रिया का पालन किया गया है :-
  
- (i) निर्दिष्ट प्राधिकारी (जिसे इसके पश्चात प्राधिकारी कहा गया है) को उपर्युक्त नियमों के अंतर्गत घरेलू उद्योग की ओर से मै० कैम्प्लास्ट सनमार लि०, चेन्नई से लिखित आवेदन प्राप्त हुआ, जिसमें यूरोपीय संघ, कोरिया गणराज्य और सऊदी अरब (जिन्हें इसके पश्चात् संबद्ध देश कहा गया है) मूल के अथवा वहाँ से निर्यातित पी वी सी पेस्ट रेजिन के पाटन का आरोप लगाया गया है;

- (ii) प्राधिकारी ने भारत में स्थित संबद्ध देशों के दूतावासों/उच्चायोगों को उपर्युक्त नियम 5 के उपनियम(5) के अनुसार, जांच आरंभ करने से पूर्व याचिकाकर्ता द्वारा प्रस्तुत एक पूर्ण प्रलेखित याचिका प्राप्त होने की सूचना दी;
- (iii) प्राधिकारी ने सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम की अनुसूची-1 के पी वी सी पेस्ट रेजिन के आयातों के संबंध में पाटनरोधी कार्रवाई आरंभ करते हुए तारीख 22 अगस्त, 2003 को भारत के राजपत्र असाधारण में एक सार्वजनिक सूचना जारी की;
- (iv) प्राधिकारी ने ज्ञात निर्यातकों, आयातकों, उद्योग संघों और शिकायतकर्ता को उक्त सार्वजनिक सूचना की एक प्रति भेजी और उन्हें अपने विचार लिखित रूप में देने का अवसर प्रदान किया;
- (v) प्राधिकारी ने उपर्युक्त नियम 6 के उप-नियम (3) के अनुसार याचिका की एक प्रति सभी ज्ञात निर्यातकों तथा भारत में संबद्ध देशों के दूतावासों/उच्चायोगों को भेजी। मै0 हान्वाह कैमिकल कारपोरेशन सिओल ने आवेदन का उत्तर दिया है और निर्यातक प्रश्नावली के सभी परिशिष्ट प्रस्तुत किए हैं और उनके द्वारा प्रस्तुत किए गए आंकड़ों का सत्यापन किए जाने की पेशकश भी की है।
- (vi) प्राधिकारी ने संगत सूचना प्राप्त करने के लिए यूरोपीय संघ, कोरिया गणराज्य और सऊदी अरब के निम्नलिखित ज्ञात निर्यातकों को प्रश्नावली भेजी:-  
  1. एल जी कैमिकल्स लि�0, सिओल, कोरिया गणराज्य
  2. वेस्टोलिट जीएमबीएच एण्ड कं0 केजी, डेनमार्क
  3. ईवीसी बिजनेस सैन्टर, यूके
  4. वेस्टोलिट जीएमबीएच एण्ड कं0 केजी, पोस्टफाच, जर्मनी
  5. सोल्विन एस ए, ब्रुसेल्स, बेल्जियम
  6. विन्नोलिट्, इजमानिंग, जर्मनी
  7. साबिक, रियाद
  8. अल्सकोडेल, बार्सिलोना
- (vii) मैसर्स एल जी कैमिकल्स लि�0 ने मैसर्स घरेलू उद्योग द्वारा दायर आवेदन और निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा जारी की गयी जांच शुरूआत संबंधी अधिसूचना का उत्तर नहीं दिया है और उसने निर्यातक प्रश्नावली से संबंधित सभी परिशिष्ट प्रस्तुत किए हैं और उसके द्वारा प्रस्तुत किए गए आंकड़ों का सत्यापन किए जाने की पेशकश की है। मैसर्स साबिक लि�0, रियाद ने प्राधिकारी को केवल

आंशिक सूचना प्रस्तुत की है और उसने निर्यातक प्रश्नावली में अपेक्षित ढंग एवं रूप में उत्तर प्रस्तुत नहीं किया है। तथापि, उन्होंने कीमत वचनबद्धता की पेशकश की है ताकि प्राधिकारी पाटन और घरेलू उद्योग को हुई क्षति के बारे में कोई निर्णय ले सकें। तथापि, अन्य किसी उत्पादक और निर्यातक ने निर्यातक प्रश्नावली का कोई उत्तर नहीं दिया है जैसाकि निर्धारित रूप एवं ढंग से अपेक्षित है और उन्होंने निर्यातक के उत्तर के किसी परिशिष्ट का उत्तर नहीं दिया है। वस्तुतः किसी उत्पादक और निर्यातक ने 25 मई, 2004 को आयोजित सार्वजनिक सुनवाई में भाग नहीं लिया। यद्यपि पाटन एवं क्षति के संबंध में उनके द्वारा कुछेक तर्क दिए गए हैं तथापि उन्होंने इनका किसी साक्ष्य अथवा सूचना द्वारा समर्थन नहीं किया है। उनके असहयोग को ध्यान में रखते हुए, प्राधिकारी ने ईयू के सभी निर्यातकों एवं साबिक को असहयोगी माना है और सर्वोत्तम उपलब्ध सूचना के अनुसार पाटन मार्जिन निकाला है। तथापि, यूरोपीय संघ के शिष्टमंडल सहित इन निर्यातकों द्वारा प्रस्तुत तर्कों का उस सीमा तक विश्लेषण किया है जिस सीमा तक उन्हें इस संबद्ध जांच में संगत पाया गया है।

- (viii) नई दिल्ली स्थित संबद्ध देशों के दूतावास/उच्चायोगों को भी जांच आरंभ होने की सूचना दी गई थी और उनसे अपने देश के निर्यातकों/उत्पादकों से निर्धारित समय के भीतर प्रश्नावली का उत्तर देने का आग्रह करने का अनुरोध किया गया था।
- (ix) प्रश्नावली असंख्य आयातकों को भेजी गयी थी और प्राधिकारी ने आयातकों एवं प्रयोक्ताओं द्वारा किए गए तर्कों का विश्लेषण उस सीमा तक किया है जिस सीमा तक वे संबद्ध जांच के लिए संगत पाए गए हैं।
- (x) प्राधिकरी ने अपने द्वारा रखी गई सार्वजनिक फाइल के रूप में विभिन्न हितबद्ध पार्टियों द्वारा दिए गए साक्ष्यों के अगोपनीय अंश उपलब्ध रखे और उन्हें हितबद्ध पार्टियों को देखने के लिए खुला रखा।
- (xi) \*\*\*\* यह चिट्ठन इस अधिसूचना में हितबद्ध पार्टियों द्वारा गोपनीय आधार पर दी गई सूचना तथा नियमों के अंतर्गत प्राधिकारी द्वारा उसे गोपनीय ही माने जाने का द्योतक है।
- (xii) पाटन की जांच एवं क्षति के लिए 1 अक्टूबर, 2002 से 30 जून, 2003 तक की अवधि शामिल है ("जिसे जांच की अवधि" अथवा "पी ओ आई" कहा गया है) क्षति के विश्लेषण के संदर्भ में रुझानों की जांच हेतु 1 अप्रैल, 2000 से

जांच की अंतिम अवधि शामिल है (जिसे विचाराधीन अवधि भी कहा गया है)। आई बी आई एस, मुंबई, डीजीसीआईएस के आयात के आंकड़ों और निर्यातक एवं आयातकों द्वारा प्रस्तुत आंकड़ों की जांच की गयी है। तथापि, डीजीसीआईएस और आईबीआईएस, मुंबई के सौदेवार आंकड़ों समेत सभी आंकड़ों की जांच करने के पश्चात निर्यातकों (सहयोगी), आयातकों द्वारा प्रस्तुत की गयी सूचना और आईबीआईएस (अंतर्राष्ट्रीय व्यापार सूचना प्रणाली), मुंबई के सौदेवार आंकड़ों पर विश्वास करना उचित समझा गया, क्योंकि डीजीसीआईएस के आंकड़े संबद्ध देशों की आयातों की सम्पूर्ण मात्रा प्रदर्शित नहीं करते हैं और इसके आंकड़ों में संबद्ध माल से भिन्न आयात परिलक्षित होते हैं।

(xiii) प्राधिकारी ने सभी हितबद्ध पक्षकारों को अपने विचार 25.5.2004 को मौखिक रूप से प्रस्तुत करने का अवसर प्रदान किया। मौखिक रूप से अपने विचार प्रस्तुत करने वाले सभी पक्षकारों से व्यक्त किए गए विचारों को लिखित में दायर करने का अनुरोध किया गया था। प्राधिकारी ने उनके द्वारा प्रस्तुत किए गए आंकड़ों का घरेलू सत्यापन एवं निर्यातकों का सत्यापन किया था। प्राधिकारी ने पाटन का निर्धारण करने और परिणामी क्षति के संबंध में अंतिम जांच परिणामों के प्रयोजनार्थ आवश्यक समझी गयी सभी सूचना मांगी और उनका सत्यापन किया। प्राधिकारी ने आवश्यक समझी गयी सीमा तक घरेलू उद्योग की मौके पर जांच की। प्राधिकारी ने केवल सहयोगी निर्यातक मैसर्स एलजी कैम एवं मैसर्स हान्चाह कैमिकल कारपोरेशन, सिओल, दक्षिण कोरिया द्वारा प्रस्तुत किए गए आंकड़ों का मौके पर सत्यापन किया और उनकी जांच भी की। उपरोक्त नियमों के नियम 16 के अनुसार इन निष्कर्षों के लिए विचार किए गए अनिवार्य तथ्यों/आधार का खुलासा 4.8.04 को ज्ञात हितबद्ध पक्षकारों को किया गया था और उन पर मिली टिप्पणियों पर भी अंतिम निष्कर्षों में विधिवत विचार किया जाएगा।

(xiv) याचिकाकर्ता द्वारा प्रस्तुत सूचना के आधार पर आमतौर से स्वीकार्य लेखा सिद्धांतों (जीएएपी) के आधार पर भारत में संबद्ध वस्तु की इष्टतम उत्पादन लागत और निर्माण एवं बिक्री लागत निकालने के लिए घरेलू उद्योग की उत्पादन लागत को निकालने के लिए घरेलू उद्योग की उत्पादन लागत का विश्लेषण भी किया गया था ताकि यह पता लगाया जा सके कि क्या पाटन मार्जिन से कम पाटनरोधी शुल्क घरेलू उद्योग को हुई क्षति समाप्त करने के लिए पर्याप्त होगा।

(xv) जांच शुरूआत करने संबंधी नोटिस की ग्रतियाँ व्यापक परिचालन हेतु फिक्की, सीआईआई, एसोचेम इत्यादि को भी भेजी गयी थीं।

### ख. विचाराधीन उत्पाद

2. वर्तमान मामले में विचाराधीन उत्पाद<sup>1</sup> पोलिविनाइल क्लोराइड पेस्ट रेजिन है जिसे इमल्सन पीवीसी रेजिन भी कहा जाता है और इसे वर्तमान जांच में पीवीसी पेस्ट रेजिन कहा गया है (संबद्ध माल भी कहा गया है) पीवी सी पेस्ट रेजिन का उत्पादन विनाइल क्लोराइड मोनोमर (वासीएम) से किया जाता है। वीसीएम का उत्पादन ईडीसी का उपयोग करके किया जाता है जिसमें एक प्रमुख उत्पाद के रूप में क्लोराइन की आवश्यकता होती है। संबद्ध माल का उत्पादन एवं बिक्री सफेद/बिना सफेद पाउडर के रूप में की जाती है। इस उत्पाद के गुण-धर्मों का वर्णन के वैल्यू इन्हेरेंट विस्कोसीटी, पार्टिकल साईज रिटेंशन, हीट लॉस, इनिसियल बीएफबी इत्यादि के रूप में किया जाता है। संबद्ध माल के विभिन्न ग्रेडों के बारे में विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों के तर्क हैं जो के वैल्यू के रूप में भिन्न हैं और जिनका उत्पादन घरेलू उद्योग द्वारा नहीं किया जा सकता अथवा संबद्ध देशों से आयात नहीं किया जा सकता। इसके अलावा, यह तर्क भी दिया गया है कि जांच शुरूआत संबंधी अधिसूचना में जिसे सीमा शुल्क वर्गीकरण का उल्लेख किया गया है वह गलत था। प्राधिकारी ने इस बारे में विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत विभिन्न तर्कों की जांच की है और उन्हें यह मालूम हुआ है कि विभिन्न ग्रेडों में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है क्योंकि ये तकनीकी एवं वाणिज्यिक रूप से प्रतिस्थापनीय हैं। अतः सभी ग्रेडें वर्तमान जांच की विषय-वस्तु हैं और वर्तमान जांच के दायरे के भीतर हैं। जांच शुरूआत संबंधी अधिसूचना में उल्लिखित सीमा शुल्क वर्गीकरण तथा घरेलू उद्योग द्वारा दायर आवेदन में उल्लिखित सीमा शुल्क वर्गीकरण के बारे में यह बात नोट की जाती है कि जांच शुरूआत संबंधी अधिसूचना में स्पष्टरूप से यह उल्लेख किया गया है कि उत्पाद वर्गीकरण निस्तारणात्मक था और सीमा शुल्क वर्गीकरण केवल संकेतात्मक था और विचाराधीन उत्पाद के दायरे पर बाध्यकारी नहीं था। यह बात भी नोट की जाती है कि प्राधिकारी ने जांच शुरूआत करने के पश्चात् सही सीमा शुल्क वर्गीकरण के बारे में सभी उत्तर देने वाले पक्षकारों को सूचित कर दिया था और इस परिवर्तन के फलस्वरूप इन संबद्ध पक्षकारों को यथा संगत समझी गयी सूचना प्रदान करने का अवसर प्रदान किया गया था। आगे यह बात भी नोट की जाती है कि किसी भी हितबद्ध पक्षकार ने इस स्पष्टीकरण के बाद आंकड़ों में संशोधन नहीं किया है। पीवीसी पेस्ट रेजिन का सामान्य अनुप्रयोग नकली चर्म (रिक्सीन, कोटेड फैब्रिक, टारपौलिन, कन्वेयर बैलिंग्स, खिलौने, ऑटोमोटिव सीलैण्ट, एडहेसिव इत्यादि) हैं। संबद्ध माल का

प्रसंस्करण उपभोक्ता के रूप पर डीओपी जैसे द्रव्य प्लास्टिसाइजर का मिश्रण करके किया जाता है ताकि मुक्त रूप से बहने वाले मिश्रण का निर्माण किया जा सके। इन मिश्रणों अथवा पेरस्टों को उचित आकारों में बनाया जाता है अथवा वस्त्र जैसे सब स्ट्रेटों पर परत चढ़ाई जाती है। संबद्ध माल का वर्गीकरण सीमा शुल्क उप शीर्ष 39042110 के भीतर सीमा शुल्क टैरिफ शीर्ष के अध्याय 39 के अंतर्गत वर्गीकृत है।

#### **ग. समान वस्तु**

3. याचिकाकर्ता ने दावा किया है कि उसके द्वारा उत्पादित माल संबद्ध देशों के मूल के अथवा वहां से निर्यातित माल के समान माल है। याचिकाकर्ता द्वारा उत्पादित संबद्ध माल और संबद्ध देशों से निर्यातित माल में कोई खास अंतर नहीं है। याचिकाकर्ता का यह दावा है कि वे दोनों तकनीकी एवं वाणिज्यिक रूप से प्रतिस्थापनीय हैं। पाटनरोधी नियमों का नियम 2(घ) यह स्पष्ट करता है कि "समान वस्तु" का तात्पर्य उस वस्तु से है जो जांच के अधीन उत्पाद से हर प्रकार से समरूप या समान हो अथवा ऐसी वस्तु की अनुपस्थिति में कोई अन्य वस्तु जिसके लक्षण जांच के अधीन वस्तुओं से काफी मिलते जुलते हों। यह प्रमाणित करने के लिए कि घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित संबद्ध माल संबद्ध देशों से निर्यातित माल के समान माल है, प्राधिकारी ने विशेषताओं जैसे तकनीकी विशिष्टताएं, विनिर्माण प्रक्रियाएं, कार्य एवं उपयोग और टैरिफ वर्गीकरण पर विचार किया है। विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों द्वारा यह तर्क दिया गया है कि सर्पेंशन पीवीसी रेजिन और पेस्ट पीवीसी रेजिन समान उत्पाद हैं और इसलिए उन्हें समान उत्पाद माना जाना चाहिए। यह भी तर्क दिया गया है कि प्लास्टिसाइज्ड पीवीसी रेजिन समान उत्पाद हैं। प्राधिकारी ने इस संबंध में विभिन्न हितबद्ध पार्टियों के विभिन्न तर्कों की जांच की है और यह माना है कि पीवीसी पेस्ट रेजिन तथा पीवीसी सर्पेंशन रेजिन दो विशिष्ट और अलग-अलग उत्पाद हैं। आगे यह नोट किया जाता है कि दोनों रेजिन उत्पादन प्रौद्योगिकी, विनिर्माण प्रक्रिया, संयंत्र एवं उपकरण, भौतिक विशेषताओं, कार्य, प्रमुख उपयोगों एवं सुमेलीकृत प्रणाली के आधार पर भारतीय व्यापार वर्गीकरण के अनुसार वर्गीकरण के संबंध में अलग-अलग हैं। उपर्युक्त मापदंडों के संबंध में अन्तर दोनों उत्पादों के लिए प्रासंगिक है। आगे यह नोट किया जाता है कि संबद्ध वस्तु की कीमतें सर्पेंशन पी वी सी रेजिन से काफी अधिक हैं। जहां तक प्लास्टिसाइज्ड पीवीसी और गैर-प्लास्टिसाइज्ड पीवीसी के समूह को संबंध है, यह नोट किया जाता है कि याचिकाकर्ता ने प्लास्टिसाइज्ड पीवीसी को विचाराधीन उत्पाद में शामिल नहीं किया था। इसके अलावा कुछ निर्यातकों ने अपने अनुरोधों में यह भी तर्क दिया है कि पेस्ट पी वी सी और सर्पेंशन

पीवीसी अलग-अलग उत्पाद हैं। जहां तक सभी ग्रेडों के विनिर्माण हेतु घरेलू उद्योग की अक्षमता के बारे में प्रयोक्ता संगठनों के अनुपुरोधों का संबंध है, प्राधिकारी ने निर्यातकों सहित विभिन्न हितबद्ध पार्टियों के अनुरोधों पर विचार करने के बाद और कोरिया गणराज्य के एकमात्र सहयोगी निर्यातक के बिक्री संबंधी आंकड़ों का इस दृष्टि से सत्यापन करने के बाद इस तर्क की सावधानीपूर्वक जांच की है कि विभिन्न निर्यातकों द्वारा विनिर्मित पी वी सी पेस्ट अथवा एमल्सन रेजिन के विभिन्न ग्रेडों में उनकी उत्पादन सुविधा, भौतिक एवं रासायनिक विशेषताओं एवं उनके उपयोग के संबंध में कोई खास अंतर नहीं है। इसके अलावा प्राधिकारी को साक्ष्य के साथ ऐसे कोई सूचना प्रस्तुत नहीं की गई है जिससे यह पता चलता हो कि घरेलू उद्योग विशेष ग्रेडों का विनिर्माण करने में समर्थ नहीं है और ये ग्रेड आपस में प्रतिस्थापनीय हैं। यह भी नोट किया जाता है कि प्रत्येक विनिर्माता व्यापक खण्ड में कुछ छोटे उत्पाद विशिष्ट खण्डों को शामिल करने के लिए अपने उत्पादों को परिष्कृत करता है, किन्तु इससे उक्त उत्पाद आपस में अप्रतिस्थापनीय नहीं बन जाता है। विस्तृत जांच पड़ताल के आधार पर प्राधिकारी यह बात नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित पीवीसी पेस्ट रेजिन में ऐसी विशेषताएं हैं जो संबद्ध देशों से आयातित माल की विशेषताओं के समान हैं। उपर्युक्त के मद्देनजर, प्राधिकारी का यह मानना है कि घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित पीवीसी पेस्ट रेजिन और संबद्ध देशों से आयात किए जा रहे एवं संबद्ध देशों में बेचे जा रहे पीवीसी पेस्ट रेजिन नियमों के अर्थ के भीतर समान वस्तुएं हैं।

#### घ. घरेलू उद्योग

4. यह याचिका मै0 केमप्लास्ट सनवार लिमि0 चेन्नई द्वारा दायर की गई है। पीवीसी रेजिन मैन्युफैक्चर्स एसोसिएशन (प्रेमा) के अनुसार भारत में संबद्ध वस्तु के केवल 2 प्रमुख उत्पादक अर्थात् याचिकाकर्ता और मै0 फिनोलेक्स इंडस्ट्रीज लिमिटेड हैं। यह नोट किया जाता है कि याचिकाकर्ता भारत में संबद्ध वस्तु का प्रमुख उत्पादक है जिसका भारत में संबद्ध वस्तु के उत्पादन का एक बड़ा हिस्सा बनता है। संबद्ध वस्तु के दूसरे उत्पादक अर्थात् मै0 फिनोलेक्स इंडस्ट्रीज लिमिं ने घरेलू उद्योग द्वारा दायर आवेदन का समर्थन किया है। कुछ इतिहास ग्रंथों ने ये तर्क दिये हैं कि याचिकाकर्ता के पास आवेदन दायर करने का अधिकार नहीं है क्योंकि पीवीसी सर्पेंशन और पीवीसी पेस्ट रेजिन समान वस्तुएं हैं। प्राधिकारी ने पूर्ववर्ती पैराग्राफ में समान वस्तु के मुद्दे की जांच की है और विस्तृत जांच के बाद प्राधिकारी यह मानते हैं कि याचिकाकर्ता नियम 2(ख) के अर्थ के भीतर घरेलू उद्योग है और याचिकाकर्ता

पाटनरोधी नियमावली के नियम 5(3)(क) के अनुसार आवेदन दायर करने के आधार संबंधी मानदण्ड को पूरा करता है।

### ड. न्यूनतम सीमा

5. जहां तक यह निर्धारित करने का संबंध है कि जांच अवधि के दौरान संबद्ध देशों से आयात न्यूनतम सीमा से अधिक रहे हैं, प्राधिकारी ने डी जी सी आई एस द्वारा उपलब्ध कराए गए संबद्ध देशों से सौदेवार आंकड़ों और सहयोगी निर्यातकों द्वारा उपलब्ध कराए गए वास्तविक निर्यातों का उल्लेख किया है। आंकड़ों की जांच करने के बाद प्राधिकारी यह मानते हैं कि सभी संबद्ध देशों से हुए आयात उनकी मात्रा के संबंध में न्यूनतम सीमा से अधिक हैं।

### च. पाटन

6. सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 की धारा 9 क(1)1 के अन्तर्गत किसी वस्तु के संबंध में सामान्य मूल्य का अर्थ है:-

- 1 "सामान्य व्यापार के दौरान समान वस्तुओं के लिए उप-धारा (6) के अंतर्गत बने नियमों के अनुसार यथानिश्चित तुलनात्मक मूल्य जबकि ऐसी वस्तु निर्यातक देश या क्षेत्र में उपभोग के लिए आशयित हो, या
  - 2 जहां निर्यातक देश या क्षेत्र के घरेलू बाजार में सामान्य व्यापार के दौरान समान वस्तु की बिक्री न हो या विशेष बाजार दशा के कारण अथवा निर्यातक देश या क्षेत्र के घरेलू बाजार में बिक्रियों की कम मात्रा के कारण ऐसी बिक्री से उचित तुलना नहीं की जा सकती, तब सामान्य मूल्य इनमें से कोई एक होगा:
- (क) निर्यातक देश या क्षेत्र से या किसी उचित तीसरे देश से आयात किये जाने पर समान वस्तु की उपधारा (6) के अंतर्गत बने नियमों के अनुसार यथा निश्चित तुलनात्मक प्रतिनिधि मूल्य ; या
  - (ख) उपधारा (6) के अंतर्गत बने नियमों के अनुसार यथानिश्चित प्रशासनिक बिक्री और सामान्य लागतों एवं लाभों के लिए उचित वृद्धि के साथ मूल के देश में उक्त वस्तु के उत्पादन की लागत;

बशर्ते कि वस्तु का आयात जब मूलता के देश से भिन्न अन्य किसी देश से किया गया हो तथा जहां वस्तु निर्यात के देश से केवल गुजरी हो या ऐसी वस्तु

निर्यात के देश में उत्पादित नहीं होती हो या निर्यात के देश में उसका कोई तुलनात्मक मूल्य नहीं हो तो इसके सामान्य मूल्य का निर्धारण मूलता के देश में इसके मूल्य के संदर्भ में किया जाएगा।<sup>1</sup>

7. प्राधिकारी ने धारा 9क(1)(ग) के अनुसार सामान्य मूल्य के निर्धारण के प्रयोजनार्थ सभी ज्ञात निर्यातकों को प्रश्नावलियां भेजीं। केवल 2 उत्पादकों अर्थात् मै0 एलजी कैम लिमि0 और मै0 हान्वाह कैमिकल कार्पोरेशन सिओल ने निर्यातक और निर्यातक प्रश्नावली के पत्र के अनुसार निर्धारित प्रपत्र में और ढंग से प्रश्नावली का उत्तर दिया है।

#### **च. 1. कोरिया गणराज्य**

##### **(क) सहयोग**

8. मै0 एलजी कैम और मै0 हान्वाह कैमिकल कार्पोरेशन, कोरिया गणराज्य ने निर्यातक प्रश्नावली में उल्लिखित विभिन्न परिशिष्टों के संबंध में सूचना प्रदान करके निर्यातक प्रश्नावली का उत्तर दिया है, उन्होंने उनके द्वारा प्रस्तुत आंकड़ों के सत्यापन का भी प्रस्ताव किया है और प्राधिकारी ने उत्पादन और निर्यातक दोनों के परिसरों का मौके पर निरीक्षण करने के बाद आंकड़ों का सत्यापन किया है।

##### **(ख) एलजी कैम के लिए सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत**

9. मै0 एलजी कैमिकल लिमिटेड कोरिया के पास कोरिया गणराज्य में युएसा में स्थित संबंधित वस्तु के उत्पादन का एकमात्र संयंत्र था जिसका मुख्यालय सिओल में था। विचाराधीन उत्पाद और उत्पादन प्रक्रिया का सत्यापन युएसा स्थित संयंत्र पर किया गया था और निर्यातक फर्म के घरेलू बिक्री सौदों तथा भारत को उनके निगमित मुख्यालय में किया गया था। परिशिष्ट 1 में यथा-सूचीबद्ध बीजकों की संख्या का चयन - प्राधिकारी ने यादृष्टिक आधार पर किया था। इन सभी बीजकों का सत्यापन किया गया था जिनमें इन बीजकों से निर्यातक प्रश्नावली की परिशिष्ट 1 में निर्दिष्ट सभी ब्यौरे शामिल थे। सत्यापन दल को साक्ष्य के साथ यह बताया गया था कि एलजी कैम अपने पेस्ट रेजिन उत्पादों को मोटे तौर पर उत्पाद की विशेषताओं के अनुसार एलजी, एमएसपी और उसके विशेष ग्रेडों में वर्गीकृत करता है। एलपी ग्रेड को आगे एलपी 170, एलपी 090 और एल पी 010वाई में पुनः विभाजित किया जाता है।

इसी प्रकार एमएसपी ग्रेड को आगे पी वी 1752, 1202, पीवी 085 और पीए 1302 में उपविभाजित किया जाता है। समस्त अलग-अलग ग्रेडों की उत्पाद विशेषताओं की जांच करने के बाद यह माना गया था कि घरेलू निर्यात और तीसरे देश के बाजारों में बेचा जा रहा संबंधित उत्पाद भौतिक एवं उत्पाद विशेषताओं दोनों के संबंध में समान है।

10. निर्यातक की उत्पादन प्रक्रियाओं का भी सत्यापन किया गया था ताकि इस निष्कर्ष पर पहुंचा जा सके कि क्या हाल के वर्षों में हुए प्रौद्योगिकीय सुधारों के उत्पाद के प्रौद्योगिकीय स्वरूप में कोई खास परिवर्तन हुआ है अथवा क्या संबद्ध वस्तु का उत्पादन सुसंगत गुणवत्ता पर हुआ है। जो कि प्रयोक्ता उद्योग के लिए सर्वाधिक वांछित और आवश्यक हो तथापि, निर्यातक की प्रक्रिया का सत्यापन करने के बाद यह निष्कर्ष निकाला गया था कि यद्यपि निर्यातकों के पास घरेलू उद्योग की तुलना में बेहतर प्रचालन प्रणालियां हैं तथापि निर्यातकों द्वारा उत्पादित विचाराधीन उत्पाद और घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित समान उत्पाद के अंतिम उत्पाद की समानता अनिवार्य विशेषताओं के संबंध में कभी भी संदेहास्पद नहीं रही थी। निर्यातक प्रश्नावली की परिशिष्ट-II में यथा सूचीबद्ध भारत को किए गए निर्यातों से संबंधित कुछेक बीजकों (सत्यापन दल द्वारा याच्छिक ढंग से चुने गए) का भी सत्यापन किया गया था। इसके अलावा, प्राधिकारी ने एफओबी पूर्व एवं एफओबी पश्चात् कीमतों से संबंधित समायोजनों पर सत्यापन किया था। तत्पश्चात् उत्पादन लागत का निर्धारण निर्यातकों द्वारा रखी गई लेखा-बहियों से किया गया था। जांच अवधि के लेखों से उत्पादन लागत के लेखांकन में अपनाई गई सुसंगत पद्धति की पुष्टि हुई था। इसके अलावा, जांच अवधि के दौरान संयंत्र के लागत संबंधी विवरणों, कच्ची सामग्री के स्टॉक संबंधी विवरणों, अलग-अलग उपयोगिताओं के बिलों का भी सत्यापन किया गया था। घरेलू बिक्री के आंकड़ों से 80/20 के परीक्षण का सत्यापन यह निर्धारित करने के लिए किया गया था कि क्या निर्यातक द्वारा किए गए घरेलू बिक्री सौदे व्यापार की सामान्य प्रक्रिया में थे। विस्तृत जांच के बाद यह निष्कर्ष निकाला गया था कि निर्यातक की घरेलू बिक्रियां वस्तुतः व्यापार की सामान्य प्रक्रिया में और पर्याप्त मात्रा में कीं गई थीं।
11. इसके अलावा, प्राधिकारी ने भारत को निर्यात बिक्रियों तथा घरेलू बाजार में उनकी बिक्रियों में समायोजन के कारकों का भी सत्यापन किया। जहाँ तक भारत को निर्यात बिक्रियों में समायोजन के कारकों का संबंध है, प्राधिकारी ने उनके रिकॉर्डों से यह सत्यापित किया कि क्या भारत को निर्यात हेतु संबद्ध वस्तु पर घरेलू भाड़ा प्रभारों और अंतर्राष्ट्रीय भाड़ा प्रभारों की वास्तविक राशि को निर्यात कीमत में से घटा दिया गया है। इसी प्रकार, पंजीकृत सीमाशुल्क

विशेषज्ञों के लिए कमीशन को निर्यात कीमत में से कम कर लिया गया है। प्राधिकारी ने नोट किया कि निर्यातक निर्यातित वस्तु पर शुल्क वापसी हासिल करते हैं जिससे कारखाना द्वार पर निबल निर्यात कीमत निकालने के लिए निर्यात कीमत में जोड़ दिया जाता है। उत्तर में किए गए उल्लेख के अनुसार अन्य समायोजनों का भी सत्यापन किया गया है। जहां तक घरेलू बिक्रियों में समायोजनों का संबंध है, भाङ्डा प्रभारों, पैकिंग खर्चों, कमीशन और ऋण संबंधी खर्चों को घटाने के अलावा प्राधिकारी ने यह पाया था कि घरेलू बाजार में बेची गई किंतु विदेशों में निर्यात न की गई वस्तु के लिए स्वदेश में विनिर्मित सिंथेटिक से संबद्ध उत्पादों में कंपनी अवशिष्ट के निपटान और अन्य सामाजिक कारणों के लिए पर्यावरणीय प्रभारों का भुगतान करती है। कारखाना द्वार पर निवल घरेलू बिक्री कीमत निकालने के लिए घरेलू बिक्री कीमतों में से इस खर्च को कम कर दिया जाता है। हस्ताक्षरित बीजकों की सूची के साथ उनकी पैकिंग सूचियों, उनके एलसी की प्रतियों, डुलाई-लदान के संयुक्त बिल की प्रतियों, कमीशन करार, भारत को निर्यात हेतु मूलता प्रमाण-पत्र, लाभानुभोगी प्रमाण-पत्रों की प्रतियों, प्राधिकारी द्वारा यावृष्टिक ढंग से चुने गए बीजकों की क्रम संख्याओं की सूची के लिए हवाई बिलों की प्रतियों की प्राधिकारी ने जांच की थी और उनकी सत्यता के लिए निर्यातकों द्वारा रखे गए मूल रिकॉर्ड से मिलान किया था।

12. पाटन मार्जिन की गणना को सामान्य मूल्य एवं कारखाना द्वार पर निर्यात कीमत के संबंध में निर्यातकों के आंकड़ों का सत्यापन करने के बाद और सभी समायोजनों का सत्यापन करने के बाद संशोधित किया गया था। सामान्य मूल्य एवं निर्यात कीमत के निर्धारण से संबंधित गणनाएं गोपनीय प्रकटन विवरण में संलग्न हैं।

(ग) हानवा कैमिकल कार्पोरेशन सिओल के लिए सामान्य मूल्य एवं निर्यात कीमत

13. प्राधिकारी ने मै0 हानवा कैमिकल कार्पोरेशन के उत्पादन एवं बिक्रियों से संबंधित सभी रिकॉर्डों का भी सत्यापन किया है। मै0 हानवा कैमिकल्स कार्पोरेशन का एकमात्र संयंत्र उल्सान में स्थित है। उत्पादों एवं उत्पादन प्रक्रिया की जांच करने के लिए उनके संयंत्र का दौरा किया गया था और प्राधिकारी द्वारा सभी लागतों एवं बिक्री संबंधी आंकड़ों की जांच सिओल स्थित उनके कार्पोरेट मुख्यालय में की गई थी। यद्यपि अंतर्देशीय परिवहन संविदा से संबंधित सभी आंकड़े कोरियाई भाषा में लिखे गए थे, तथापि निर्यातकों ने

संविदा में प्रयुक्त महत्वपूर्ण शब्दों का अंग्रेजी अनुवाद उपलब्ध कराया था। इसी प्रकार अभिकर्ता के कमीशन को निर्यातकों द्वारा रखे गए वास्तविक रिकॉर्डों के अनुसार सत्यापित किया गया था और कंपनी द्वारा वहन किए गए पैकिंग व्ययों और अंतर्देशीय परिवहन व्ययों के सत्यापन में भी यह प्रक्रिया अपनायी गई। यह भी जांच की गई कि ₹० हनवा कैमिकल कार्पोरेशन (एचसीसी) पीवीसी पेस्ट्स इमल्सन के 16 ग्रेडों का उत्पादन कर रही है और प्रत्येक ग्रेड की पहचान एक अलग पहचान कोड से की जाती है यद्यपि प्राधिकारी इसके पीछे अलग-अलग ग्रेडों की आगे पहचान के लिए सामान्य नामांकन के अलावा किसी और वैज्ञानिक कोडिंग प्रणाली के बारे में किसी निष्कर्ष पर नहीं पहुंचे। तथापि, उनके भिन्न-भिन्न पीवीसी पेस्ट ग्रेडों में केवल एक ग्रेड अर्थात् केएल-31 का भारत को निर्यात किया जाता है। आगे यह नोट किया गया था कि भारत और घरेलू बाजार में बेची गई संबद्ध वस्तु भौतिक और तकनीकी विशेषताओं में तुलनीय है। भारत को घरेलू बिक्री से संबंधित सूचना की जांच करते समय यह पाया गया था कि अपने मूल उत्तर में संबद्धता के बारे में कुछ सूचना प्राधिकारी को सही ढंग से उपलब्ध नहीं कराई गई थी। तथापि, उत्पादक और निर्यातक ने अपनी आपूर्तियों और उपभोक्ताओं के साथ संबद्धता का उल्लेख करते हुए अपेक्षित आंकड़े तुरंत प्रस्तुत कर दिए थे। अतः प्राधिकारी ने संबद्ध पार्टियों से संबंधित सौदों को अलग किया और उसके बाद परिशिष्ट-3ख और क में उल्लिखित सभी समायोजनों को छोड़ने के बाद कारखाना द्वार पर निवल घरेलू बिक्री कीमत (सामान्य मूल्य) निकाली। ₹० एचसीसी के लिए पाटन मार्जिन निकालने से पूर्व प्राधिकारी द्वारा 5% पर्याप्तता परीक्षण और 80-20 के संबंध में व्यापार की सामान्य प्रक्रिया संबंधी परीक्षण किया गया था। इस प्रकार भारत को निर्यातों के लिए शुल्क वापसी के घटक को जोड़ा गया है और परिशिष्ट 3 ख में अपशिष्ट निपटान शुल्क के संबंध में पर्यावरणिक प्रभारों को नामे डाला गया है ताकि सामान्य मूल्य के निर्धारण हेतु कारखाना द्वार पर निवल बिक्री कीमत निकाली जा सके। पाटन मार्जिन की गणना को सामान्य मूल्य एवं कारखाना द्वार पर निर्यात कीमत के संबंध में निर्यातकों के आंकड़ों का सत्यापन करने के बाद और सभी समायोजनों का सत्यापन करने के बाद संशोधित किया गया था। सामान्य मूल्य एवं निर्यात कीमत के निर्धारण से संबंधित गणनाएं गोपनीय प्रकटन विवरण में संलग्न हैं।

#### (घ) तुलना

14. कारखाना बाह्य स्तर पर सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत के बीच उचित तुलना के प्रयोजनार्थ उन अन्तरों, जिनके दावे किए गए और कीमतों और कीमत तुलनीयता को प्रभावित करने के लिए प्रदर्शित किया गया, के लिए

समायोजनों के रूप में यथोचित अनुमति दी गई है। सीमा शुल्क टैरिफ अधिनियम के अंतर्गत बनाए गए पाटनरोधी नियमों के अनुबंध 1 के पैरा 6 के अनुसार परिवहन, बीमा, संभलाई, लदान, ऋण लागतों और अन्य कार्यों के संबंध में ये समायोजन, जहां भी उपयुक्त हों, किए गए थे।

(ड.) एलजी कैमिकल और हनवा कैमिकल को-ऑपरेशन के लिए पाटन - मार्जिन

15. पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध 1 के नियम 6(iv) के अनुसार पाटन मार्जिन भारित औसत निर्यात कीमत के साथ भारित औसत सामान्य मूल्य के आधार पर स्थापित किया गया था। तुलना से जांच अवधि के दौरान निर्यातकों द्वारा संबद्ध वस्तु की मौजूदगी मालूम नहीं हुई थी। निर्यात कीमत के प्रतिशत के रूप में व्यक्त किए गए भारित औसत पाटित मार्जिन का निर्धारण किया गया है और दोनों निर्यातकों के लिए यह नकारात्मक है।

### च.2 कोरिया गणराज्य से अन्य निर्यातक

16. चूंकि हनवा कैमिकल को-ऑपरेशन और एलजी कैमिकल को-ऑपरेशन के निर्यातों की मात्रा कोरिया से किए गए सकल आयातों की मात्रा की तुलना में बहुत अधिक थी (वस्तुतः कोरिया गणराज्य से किए गए समस्त निर्यात जांच अवधि के दौरान केवल इन्हीं दो निर्यातकों द्वारा किए गए थे) इसलिए शेष निर्यातकों के लिए किसी अपशिष्ट पाटन मार्जिन का निर्धारण नहीं किया गया है।

### च.3 यूरोपीय संघ

#### (क) सहयोग:

17. यूरोपीय संघ के निर्यातकों की किसी भी कंपनी ने निर्यातक प्रश्नावली में यथा उल्लिखित रूप में और उस तरीके से उत्तर प्रस्तुत नहीं किया है। वास्तव में उनमें से किसी ने भी परिशिष्ट 1 के संबंध में पूरी सूचना प्रस्तुत नहीं की है जिससे उद्गम के देश में सौदेवार बिक्रियों की सूचना मालूम हो सके। इसके

अतिरिक्त, उन्होंने जांच अवधि के दौरान भारत में सम्बद्ध वस्तु के निर्यातों के बारे में कोई सूचना प्रस्तुत नहीं की है, हालांकि कुछ निर्यातकों ने भारत को पोतलदानों से संबंधित कुछ माल-सूचियाँ प्रस्तुत की हैं जिनमें ये आरोप लगाया गया है कि उनकी कीमतों से घरेलू उद्योग की बिक्रियों में कटौती नहीं हो रही है और वस्तुतः वे घरेलू उत्पादकों की बिक्री कीमत से अधिक हैं। तथापि, उनमें से किसी ने भी निर्यातक प्रश्नावली के अनुसार यह सूचना प्रस्तुत नहीं की है। इसके अतिरिक्त उन्होंने 2ए प्रस्तुत नहीं किया है इससे भारत को घरेलू उद्योग और अन्य देशों के निर्यातकों के निर्यातों के अलग-अलग आंकड़ों के साथ कंपनी की सम्बद्ध माल की बिक्रियाँ मालूम हो सकें। इसी प्रकार, परिशिष्ट 3 भी प्रस्तुत नहीं किया गया है जिससे फर्म के प्रचालन आंकड़े मालूम होते। इसके अलावा, उन्होंने भारत और ईयू के लिए बिक्री कीमत ढाँचे के बारे में भी कोई सूचना प्रस्तुत नहीं की है। इसके अतिरिक्त, परिशिष्ट 4 और परिशिष्ट 5 से संबंधित सूचना भी प्रस्तुत नहीं की गई है जिससे स्थापित क्षमता, उत्पादन, बिक्रियाँ और कच्ची सामग्री की खपत तथा पुनर्समायोजन की जानकारी मिलती। इसके अलावा, परिशिष्ट 6 में अपेक्षित कच्ची सामग्री की खपत और परिशिष्ट 7 में यथा-अपेक्षित खर्च का आबंटन और विभाजन का विवरण प्रस्तुत नहीं किया गया है। इसके अतिरिक्त, परिशिष्ट 8 की अपेक्षा के अनुसार उत्पादन लागत और परिशिष्ट 8क और 8ख में यथा अपेक्षित कारखाना लागत और भारत को निर्यात लाभ तथा घरेलू बिक्रियों का विवरण भी नहीं दिया गया है। इसके बिना सामान्य कीमत के निर्धारण के लिए घरेलू बिक्रियों हेतु व्यापार की सामान्य प्रक्रिया की जांच करना संभव नहीं है। इसके अलावा परिशिष्ट 9 की अपेक्षा के अनुसार एस जी ए ऊपरी खर्चों के आबंटन का विवरण भी नहीं दिया गया है। वास्तव में निर्यातकों द्वारा निर्यातक प्रश्नावली में किए गए समस्त निवेदन कुल मिलाकर गलत हैं। प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि प्राधिकारी द्वारा अगोपनीय सारांश के साथ-साथ निर्यातक प्रश्नावली में यथा-निर्धारित प्रपत्र और ढंग से पूरा उत्तर प्रस्तुत करने के लिए अनुस्मरण कराया गया था और इस तथ्य का अनुस्मरण भी कराया गया था कि यदि सूचना उचित समय के भीतर नहीं दी गई हो, प्राधिकारी घरेलू उद्योग द्वारा जांच की शुरूआत किए जाने के लिए दिए गए आवेदन में दी गई जानकारी सहित उपलब्ध तथ्यों के आधार पर निर्धारण करने के लिए स्वतन्त्र होंगे। प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि किसी भी निर्यातक और उत्पादक ने प्राधिकारी के उस पत्र का कोई उत्तर नहीं दिया है जिसमें निर्यातक प्रश्नावली की अपेक्षा के अनुसार उस तरीके से परिशिष्ट-वार सूचना मांगी गई थी।

निर्यातक प्रश्नावली के उत्तर में सूचना प्रस्तुत न करने की दृष्टि से प्राधिकारी उत्पादकों और निर्यातकों को पाटनरोधी करार और पाटनरोधी नियमावली के अर्थों में असहयोगी मानते हैं।

#### (ख) सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत

18. प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि निर्यातक ने निर्यातक प्रश्नावली की अपेक्षा के अनुसार उस रूप और तरीके से सूचना प्रस्तुत नहीं की है। चूंकि विभिन्न परिस्थितियों (विशेषतः I और VIII) के अन्तर्गत संगत सूचना प्रस्तुत नहीं की गई थी इसलिए प्राधिकारी यह निर्धारण नहीं कर सकते कि व्यापार की सामान्य प्रक्रिया में क्या घरेलू बिक्रियां हुई हैं। सामान्य मूल्य के निर्धारण के संबंध में याचिकाकर्ता द्वारा किए गए दावे पर भी स्थिरतक अथवा अन्य हितबद्ध पक्षकारों ने विवाद नहीं किया है। इन परिस्थितियों में सामान्य मूल्य नियमों के अनुसार पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(४) के अन्तर्गत उपलब्ध तथ्यों के आधार पर निर्धारित किया जाता है। इसलिए देश अथवा उद्गम स्थान में उत्पादन की अनुमानित लागतों और बिक्रियों, प्रशासनिक तथा सामान्य खर्चों और उचित समायोजन करने के बाद उचित लाभ से संबंधित उपलब्ध सूचना को निर्यातक के लिए सम्बद्ध वस्तु का सामान्य मूल्य परिकलित करने के लिए आधार के रूप में ली गई है। कारखाना बाह्य स्तर पर निर्यात कीमत का निर्धारण आईईआईएस (अंतर्राष्ट्रीय व्यावसायिक सूचना प्रणालियाँ) से उपलब्ध हुए आंकड़ों और उपलब्ध तथ्यों के अनुसार किए गए समायोजनों से किया गया है।

#### (ग) तुलना

19. कारखाना बाह्य स्तर पर सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत के बीच उचित तुलना करने के प्रयोजनार्थ परिवहन, बीमा, संभलाई और अन्य लागतों के संबंध में, जहां उचित था, यथोचित अनुमति दी गई है।

#### (घ) पाटन मार्जिन

20. पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध 1 के नियम 6(iv) के अनुसार पाटन मार्जिन कारखाना बाह्य स्तर पर भारित औसत निर्यात कीमत के साथ परिगणित सामान्य मूल्यों के आधार पर निर्धारित किया गया था। तुलना से जांच अवधि

के दौरान निर्यातक द्वारा सम्बद्ध वस्तु के पाटन की मौजूदगी मालूम हुई। निर्यात कीमत के प्रतिशत के रूप में अभिव्यक्त भारित औसत पाटन मार्जिन का निर्धारण 20.32% किया गया था।

### च.5. सऊदी अरब

#### (क) सहयोग

21. सऊदी अरब के एकमात्र निर्यातक मै0 एसएबीआईसी ने निर्यातक प्रश्नावली के अनुसार उत्तर प्रस्तुत नहीं किया है। तथापि मै0 एसएबीआईसी ने जांच प्रारम्भ अधिसूचना के संबंध में कुछ तर्क दिए हैं और आयातकों के नामों सहित भारत में की गई अपनी बिक्रियों के संबंध में कुछ आंकड़े भी प्रस्तुत किए हैं हालांकि उनके द्वारा प्रस्तुत की गई सूचना स्पष्ट रूप से त्रुटिपूर्ण है और उत्पादन में वास्तव में अन्य बातों के साथ-साथ घरेलू बाजार में सौदेबार सूचना और लागत और उत्पादन की लागत और भारत तथा अन्य देशों के लिए जांच अवधि के दौरान संबद्ध वस्तु की उत्पादन लागत, भारत और घरेलू बिक्रियों के लिए बिक्री कीमत की सूचना देते हुए परिशिष्ट-वार बिल्कुल भी सूचना प्रस्तुत नहीं की गई है। मै0 एसएबीआईसी ने जांच अवधि के दौरान भारत को अपनी बिक्रियों से संबंधित कुछ माल सूचियाँ प्रस्तुत की हैं। दूसरा यह आरोप लगाया गया है कि उनकी कीमतों से घरेलू उद्योग की बिक्रियाँ कम नहीं हुई हैं और वास्तव में घरेलू उत्पादक की बिक्री कीमत से अधिक है। तथापि निर्यातक द्वारा निर्यातक प्रश्नावली के अनुसार सूचना प्रस्तुत न किए जाने के कारण उन्हें इस जांच में असहयोगी माना गया है।

#### (ख) सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत

22. प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि निर्यातकों ने निर्यातक प्रश्नावली की अपेक्षा के अनुसार उस रूप और तरीके से सूचना प्रस्तुत नहीं की है। चूंकि विभिन्न परिशिष्टों (विशेषतः I और VIII) के अन्तर्गत संगत सूचना प्रस्तुत नहीं की गई थी इसलिए प्राधिकारी यह निर्धारण नहीं कर सकते कि व्यापार की सामान्य प्रक्रिया में क्या घरेलू बिक्रियां हुई हैं। सामान्य मूल्य के निर्धारण के संबंध में याचिकार्कर्ता द्वारा किए गए दावे पर भी निर्यातक अथवा अन्य हितबद्ध पक्षकारों ने विवाद नहीं किया है। इन परिस्थितियों में सामान्य मूल्य नियमों के अनुसार पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(8) के अन्तर्गत उपलब्ध तथ्यों के आधार पर निर्धारित किया जाता है। इसलिए देश अथवा उद्गम स्थान में उत्पादन की अनुमानित लागतों और बिक्रियों, प्रशासनिक तथा सामान्य खर्चों और उचित समायोजन करने के बाद उचित लाभ से संबंधित उपलब्ध सूचना को सऊदी

अरब के निर्यातक के लिए सम्बद्ध वस्तु का सामान्य मूल्य परिकलित करने के लिए आधार के रूप में ली गई है। कारखाना बाह्य स्तर पर निर्यात कीमत का निर्धारण उचित समायोजनों के बाद निर्यातकों द्वारा अपने निवेदन में की गई भारित औसत निर्यात कीमत को ध्यान में रखते हुए किया गया है।

### तुलना

23. कारखाना बाह्य स्तर पर सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत के बीच उचित तुलना करने के प्रयोजनार्थ परिवहन, बीमा, संभलाई और अन्य लागतों के संबंध में, जहां उचित था, यथोचित अनुमति दी गई है।

#### पाटन मार्जिन

24. पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध 1 के नियम 6(iv) के अनुसार सउदी अरब के निर्यातकों के लिए पाटन मार्जिन कारखाना बाह्य स्तर पर भारित औसत निर्यात कीमत के साथ परिणित सामान्य मूल्यों के आधार पर निर्धारित किया गया था। तुलना से सउदी अरब के निर्यातकों द्वारा संबद्ध वस्तुओं के पाटन की मौजूदगी मालूम हुई। निर्यात कीमत के प्रतिशत के रूप में अभिव्यक्त भारित औसत पाटन मार्जिन का निर्धारण किया गया है और यह 5.26% है। चूंकि सउदी अरब के किसी निर्यातक से कोई सहयोग प्राप्त नहीं हुआ था, इसलिए प्राधिकारी द्वारा पाटन मार्जिन समग्र सउदी अरब के लिए निर्धारित किया गया है।

देश	उत्पादक/ निर्यातक का नाम	सामान्य मूल्य	निर्यात कीमत	पाटन मार्जिन(%)
कोरिया जन. गणराज्य	मै0 हनवा कैमिकल कारपोरेशन, सिओल	***	***	-1.69
	एलजी कैमिकल, सिओल	***	***	- .98
ईयू	सभी उत्पादक/निर्यातक	***	***	20.32
सउदी अरब	सभी उत्पादक/निर्यातक	***	***	5.26

### छ. क्षति

#### क) घरेलू खपत/मांग

25. घरेलू बाजार में विचाराधीन उत्पादन की घरेलू खपत/मांग का आकलन करने के लिए प्राधिकारी ने घरेलू बाजार में सकल आयातों के साथ घरेलू उद्योग की बिक्री की मात्रा को जोड़ा है। इस आधार पर घरेलू बाजार में सम्बद्ध वस्तु की घरेलू मांग अथवा खपत 2000-01 में 32274 मीटन से बढ़कर 40693 मीटन हो गई। इसमें 26% की वृद्धि प्रदर्शित हुई।

घरेलू खपत या मांग

	2000-01	2001-02	2002-03	जांच अवधि वार्षिकीकृत
मांग	***	****	****	****
सूची	100.00	127.42	119.45	126.09

#### 26. (क) संबंधित आयातों के प्रभावों का समग्र आकलन

- (i) प्राधिकारी ने इस बात की जांच की कि क्या पाटनरोधी करार के अनुच्छेद 3.3 और सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम के अंतर्गत पाटनरोधी नियमावली के नियम 11 के अनुसार सज़दी अरब, ईयू और कोरिया के मूल की संबद्ध वस्तुओं के आयातों का समग्र रूप से आकलन किया जाना चाहिए।
- (ii) कोरिया गणराज्य के दोनों निर्यातकों को छोड़कर संबद्ध देशों (ईयू और सज़दी अरब, जिन्हें शेष जांच परिणामों में संबद्ध देशों के रूप में जाना एवं संदर्भित किया गया है) में से प्रत्येक से आयातों के संबंध में निर्धारित किया गया पाटन मार्जिन, पाटनरोधी करार के अनुच्छेद 5.8 और पाटनरोधी नियमावली के नियम 14 में यथा परिभाषित निर्धारित न्यूनतम सीमा से अधिक था और कोरिया गणराज्य को छोड़कर इन देशों में से प्रत्येक से पाठित आयातों की मात्रा नगण्य नहीं थी। तदनुसार, कोरिया गणराज्य के विस्तृद्वारा पाटनरोधी जांच को समाप्त करने का प्रस्ताव किया गया है।
- (iii) घरेलू उत्पाद और विभिन्न देशों के उत्पादकों द्वारा आपूर्ति किया गया उत्पाद समान वस्तुएं हैं; और आयातित-उत्पाद एवं घरेलू रूप से उत्पादित संबद्ध वस्तु को एक दूसरे के स्थान पर प्रयोग किया जा सकता है और किया जा रहा है।

विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत किए गए उत्तर और घरेलू उद्योग की उपभोक्तावार बिक्रियों से उनका सह संबंध यह सिद्ध करता है कि ऐसे अनेक पक्षकार हैं जिन्होंने घरेलू उद्योग से खरीद एवं संबद्ध देशों से आयातों दोनों का प्रयोग किया है। आगे यह भी नोट किया गया है कि विभिन्न देशों से आपूर्ति की गई संबद्ध वस्तु उसी बाजार में प्रतिस्पर्धा करती है। इसके अलावा, यह भी नोट किया गया है कि संबद्ध देशों के विभिन्न उत्पादकों द्वारा आपूर्ति किए गए उत्पादों को भारत में समान अवधि के दौरान तुलनीय बिक्री शृंखलाओं और समान वाणिज्यिक स्थितियों के अंतर्गत बेचा जा रहा है। ईयू के मामले में कीमत कटौती सकारात्मक है।

- (iv) उपर्युक्त के आलोक में प्राधिकारी ने यह माना है कि ईयू और सऊदी अरब (कोरिया को छोड़कर जिन्हें इसके बाद शेष जांच परिणामों में संबद्ध देश कहा गया है) से हुए आयातों के संबंध में पाटनरोधी करार के अनुच्छेद 3.3 और नियम 11 के अंतर्गत अनुबंध 11 के पैरा iii के अनुसार निर्धारित मापदंड पूरे होते हैं और इसलिए इन दोनों देशों से हुए आयातों को क्षति निर्धारणों हेतु जोड़ा जाना चाहिए। कोरिया गणराज्य से होने वाले आयातों के लिए किसी क्षति निर्धारण का प्रस्ताव नहीं किया गया है क्योंकि उस देश से हुए आयातों का पाटन मार्जिन ऋणात्मक है।

**(ख) संबद्ध देशों की मूलता वाले आयात**

मात्रा

27. घरेलू बाजार में संबद्ध देशों से विचाराधीन पाटित आयातों की मात्रा में विचाराधीन अवधि के दौरान 222% की वृद्धि हुई है। प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि विचाराधीन अवधि के दौरान घरेलू खपत में 26% की वृद्धि हुई है।

	कुल मांग में पाटित आयातों का हिस्सा			
	2000-01	2001-02	2002-03	जांच अवधि वार्षिकीकृत
घरेलू उद्योग	***	****	****	****
अन्य उत्पादक	***	****	****	****
पाटित आयात	2846	3272	5465	6329
अन्य आयात	2243	2950	1460	1966
कुल बाजार	***	****	****	****

<u>बाजार हिस्से में परिवर्तन</u>				
कुल बाजार	***	***	***	***
आधार वर्ष से कुल बाजार में परिवर्तन		27.42	19.45	26.09
पाटित आयात	2846	3272	5465	6329
पाटित आयात में परिवर्तन		14.96	92.03	122.39
अन्य आयात	2243	2950	1460	1966
अन्य आयातों में परिवर्तन		31.52	-34.92	-12.33
द्वारा % हिस्सा				
पाटित वरतु	8.82	7.96	14.18	15.55
अन्य आयात	6.95	7.17	3.79	4.83

(ग) कुल आयातों में संबद्ध देशों का हिस्सा

28. विचाराधीन अवधि के दौरान, संबद्ध देशों से हुए पाटित आयातों के घरेलू बाजार के हिस्से में 36% बिन्दुओं की वृद्धि हुई है। पाटित आयातों का बाजार हिस्सा वर्ष 2000-01 में कुल आयातों के 55% से बढ़कर जांच अवधि के दौरान 76.3% हो गया है।

कुल आयातों में संबद्ध देशों से हुए आयातों का हिस्सा				
वार्षिक आंकड़े				
	2000-01	2001-02	2002-03	जांच अवधि वार्षिकीकृत
यूरोपीय संघ	***	***	***	***
बाजार हिस्सा	29.86	20.44	49.63	54.66
सउदी अरब	***	***	***	***
बाजार हिस्सा	26.07	32.15	29.30	21.63
कुल पाटित आयात	***	***	***	***
पाटित आयातों का कुल बाजार हिस्सा	55.93	52.59	78.92	76.30

कोरिया को छोड़कर अन्य देश	***	****	****	****
अन्य बाजार हिस्सा	44.07	47.41	21.08	23.70
कुल आयात	5089	6222	6925	8296

घरेलू उत्पादन के अनुपात के रूप में संबद्ध देशों से हुए आयातों का बाजार हिस्सा				
	2000-01	2001-02	2002-03	जांच अवधि वार्षिकीकृत
संबद्ध देश	14.83	12.63	22.19	24.92

घरेलू मांग के अनुपात के रूप में संबद्ध देशों से हुए आयातों का बाजार हिस्सा				
	2000-01	2001-02	2002-03	जांच अवधि वार्षिकीकृत
संबद्ध देश (पाटित)	8.8	8.0	14.2	15.6

29. उपर्युक्त जांच के आधार पर, प्राधिकारी का यह निष्कर्ष है कि कुल मांग के हिस्से के रूप में पाटित आयातों के बाजार हिस्से में भारी वृद्धि हुई है और इसमें पिछले वर्षों की तुलना में जांच अवधि के दौरान काफी अधिक वृद्धि हुई है। प्राधिकारी साक्ष्यों का परीक्षण करने के बाद इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि घरेलू उद्योग को संबद्ध देशों से हुए संबद्ध वस्तुओं के बढ़े हुए आयातों के कारण क्षति का सामना करना पड़ रहा है।

(घ) कीमतें

विचाराधीन अवधि के दौरान कीमत की गणना

30. वर्ष 2001-02 और जांच अवधि के बीच, संबद्ध देशों के मूल के आयातों में औसत सीआईएफ कीमतों में विचाराधीन अवधि के दौरान 8.4% बिन्दुओं की भारी कमी हुई है। यह कमी विचाराधीन अवधि के दौरान लगातार बनी रही है।

पाटित आयातों की औसत कीमत				
	2000-01	2001-02	2002-03	जांच अवधि वार्षिकीकृत
पाटित वस्तुओं की	****	****	****	****

सीआईएफ कीमत रु०/मी.टन				
--------------------------	--	--	--	--

पाटित आयातों की औसत कीमत				
	2000-01	2001-02	2002-03	जांच अवधि वार्षिकीकृत
सूचीबद्ध(आयात कीमत)	100.00	93.1	93.6	91.6

(ड.) कीमत कटौती

31. संबंधित उत्पाद की तुलनीय किस्मों के लिए तुलना व्यापार के समान स्तर पर निर्यातिक उत्पादकों और घरेलू बाजार में घरेलू उद्योग की औसत बिक्री कीमत, असंबद्ध उपभोक्ताओं को सभी छूटों एवं करों के निवल योग के बीच की गई थी। घरेलू उद्योग की कीमतें कारखाना द्वारा स्तर पर निर्धारित की गई थीं। संबंधित संबद्ध देशों की परिकलित सीआईएफ कीमतों को आयात के बाद अनुप्रयोज्य शुल्कों के लिए समायोजित किया गया था। इस तुलना से यह पता लगा था कि जांच अवधि के दौरान संबद्ध देशों के मूल की संबद्ध वस्तुओं को घरेलू बाजार में ऐसी कीमतों पर बेचा गया था जिनसे घरेलू उद्योग की घरेलू बिक्री कीमतों के प्रतिशत के रूप में घरेलू उद्योग की कीमतों में कटौती हुई है।

संबद्ध एवं अन्य देशों से कीमत कटौती				
सूचीबद्ध आंकड़े				
	2000-01	2001-02	2002-03	जांच अवधि वार्षिकीकृत
ईयू का पहुंच मूल्य	****	****	****	****
बिक्री कीमत	****	****	****	****
ईयू से विचाराधीन उत्पाद %	(1-5)	(4-8)	(4-10)	3-8
सउदी अरब का	****	****	****	****

पहुंच मूल्य				
बिक्री कीमत	****	****	****	****
सऊदी अरब से विचाराधीन उत्पाद %	5-10	(1-3)	4-8	(3-6)

(च) कम कीमत पर बिक्री

32. प्राधिकारी ने याचिकाकर्ता के इस दावे की भी जांच की है कि घरेलू उद्योग को पीवीसी पेस्ट रेजिन की बिक्री से हुए घाटों के कारण नुकसान हो रहा है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि क्षति का आकलन करने में कम कीमत पर बिक्री एक महत्वपूर्ण संकेतक है। प्राधिकारी ने विचाराधीन उत्पाद के लिए क्षतिरहित कीमत की गणना की है और कम कीमत पर बिक्री की मात्रा ज्ञात करने के लिए पहुंच मूल्य के साथ इसकी तुलना की है। यह विश्लेषण बड़ी मात्रा में कम कीमत पर बिक्री दर्शाता है जिससे ईयू से हुए पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग को क्षति हुई है। इसके अलावा, आयातों से घरेलू बाजार में कीमतों पर अत्यधिक ह्लासकारी प्रभाव पड़ा था, क्योंकि क्षति जांच की संपूर्ण अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की बिक्री कीमतों में भारी कमी प्रदर्शित हुई है। घरेलू उद्योग की कीमतों पर ह्लासकारी प्रभाव के कारण, कीमत कटौती का मार्जिन अधिक प्रतीत नहीं होता है और कुछ संबद्ध देशों से हुए आयातों में भी नकारात्मक कीमत कटौती प्रदर्शित हुई है। तथापि, प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि ऐसा घरेलू उद्योग की कीमतों में कमी के कारण हो सकता है। इस प्रकार, उपलब्ध साक्ष्यों की जांच से यह प्रदर्शित होता है कि जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग को, समग्र रूप से, संबद्ध वस्तु की अपनी बिक्रियों पर क्षति उठानी पड़ी है। प्राधिकारी ने जांच अवधि के दौरान कीमत कटौती की मात्रा को निर्धारित किया है और उनका यह निष्कर्ष है कि जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग को संबद्ध देशों से पाटित आयातों से हुई कीमत कटौती और ईयू से काफी कम कीमतों पर बिक्री के कारण नुकसान उठाना पड़ा है।

(छ) कीमत हास

33. जैसा कि पिछले पैराग्राफ में नोट किया गया है, घरेलू उद्योग की बिक्री कीमतों में वर्ष 2000-01 की तुलना में जांच अवधि के दौरान कमी आई है। प्राधिकारी जांच के आधार पर इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि संबद्ध देशों से पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग को कीमत हास का सामना करना पड़ रहा है। प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि परिवर्तनशील लागतें संबद्ध वस्तु की उत्पादन लागत का काफी बड़ा हिस्सा हैं और विचाराधीन अवधि के दौरान यद्यपि वर्ष 2000-01 से जांच अवधि के बीच उत्पादन लागत में 5% की कमी आई है तथापि, घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत में 11% से भी अधिक की कमी हुई है। प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि समग्र रूप से बिक्री मात्रा बढ़ाने के बाद भी, घरेलू उद्योग की बिक्री कीमतों में कमी हुई है और घरेलू उद्योग को संबद्ध वस्तु को इसकी क्षतिरहित कीमत से काफी कम कीमत पर बेचना पड़ रहा है। जांच के आधार पर, प्राधिकारी का यह निष्कर्ष है कि घरेलू उद्योग को कीमत हास के कारण भी क्षति हुई है।

(ज) घरेलू उद्योग की स्थिति

प्रारंभिक टिप्पणियाँ

34. भारत में घरेलू उद्योग पर आयातों के प्रभाव की जांच करने के लिए प्राधिकारी ने उपर्युक्त नियमों के अनुबंध II(iv) के अनुसार ऐसे संकेतकों पर विचार किया है जो उद्योग की स्थिति पर प्रभाव डालते हैं जैसे उत्पादन, क्षमता उपयोग, बिक्री मात्रा, स्टॉक, लाभप्रदता, निवल बिक्री प्राप्ति, पाटन की मात्रा और मार्जिन इत्यादि।

क्षमता, उत्पादन और क्षमता उपयोग

उत्पाद क्षमता एवं उपयोग (वार्षिक)				
	2000-01	2001-02	2002-03	जांच अवधि वार्षिकीकृत
क्षमता	18000	25560	34080	34080
उत्पादन	19005	25807	27796	25029
क्षमता उपयोग%	105.58	100.97	81.56	73.44

35. घरेलू उद्योग के उत्पादन में सितम्बर 02 तक वृद्धि होने के बाद गिरावट आई है। यद्यपि सितम्बर 02 तक उत्पादन में वृद्धि क्षमता एवं बिक्री के कारण हुई थी, अक्टूबर 02-जून 03 के दौरान उत्पादन में गिरावट, बिक्री मात्रा एवं बिक्री कीमत दोनों ही क्षेत्रों में उत्पाद के प्रतिकूल निष्पादन के कारण आई थी। आगे यह भी नोट किया गया है कि याचिकाकर्ताओं द्वारा दर्शाई गई क्षमता को ध्यान में रखते हुए घरेलू उद्योग के उत्पादन में जांच अवधि के दौरान वृद्धि होनी चाहिए थी। तथापि, यह नोट किया गया है कि घरेलू उद्योग के उत्पादन में वृद्धि के स्थान पर गिरावट आई है।

#### क्षमता का उपयोग:-

36. घरेलू उद्योग के क्षमता उपयोग में क्षति की अवधि के दौरान लगातार गिरावट आती रही है, जैसा कि नीचे दी सारणी से ज्ञात होता है:-

वर्ष	इकाई	2000-01	2001-02	2002-03	अक्टू.02- जून02	वार्षिकीकृत
क्षमता	मी.टन	18000	25560	34080	25650	34080
क्षमता उपयोग	%	105.08	100.97	78.22	73.44	73.44

यह पाया गया है कि उच्च मांग की आशा में घरेलू उद्योग ने क्षमता में वृद्धि की है एवं दो चरणों में 18.7 करोड़ रूपए का निवेश किया है। सर्वप्रथम वर्ष 2001-02 में क्षमता में वृद्धि (7560 मी. टन तक की) की गई तथा उसी वर्ष में घरेलू उद्योग द्वारा लगभग 100% क्षमता उपयोग के स्तर की प्राप्ति की गई। घरेलू उद्योग ने वर्ष 2002-03 में पुनः क्षमता में वृद्धि (8520 मी. टन तक की) की। यद्यपि अप्रैल-सितम्बर 2002 की अवधि में उत्पादन में मामूली वृद्धि हुई, फिर भी मात्रा एवं कीमत के संबंध में अत्यधिक प्रतिकूल बिक्री निष्पादन के मद्देनजर जांच की अवधि में इसमें कटौती की गई है।

37. निर्दिष्ट प्राधिकारी ने यह जांचने के लिए कि क्या घरेलू उद्योग द्वारा किए गए क्षमता संवर्धन से घरेलू उद्योग को हुई क्षति में वृद्धि हुई है, उत्पाद की वर्तमान

एवं अनुमानित मांग का परीक्षण किया तथा घरेलू उद्योग द्वारा सृजित क्षमताओं के साथ उसकी तुलना की। यह पाया गया कि कंपनी द्वारा संवर्धित क्षमता, मांग में वर्तमान एवं अनुमानित वृद्धि की तुलना असंगत नहीं है, जैसा कि नीचे दी गई सारणी से देखा जा सकता है:-

वर्ष	इकाई	2000-01	2001-02	2002-03	अक्टू.02-जून02	जांच अवधि वार्षिकीकृत
क्षमता - केमप्लास्ट तथा फिनोलेक्स -कुल क्षमता	सूचकांक	100	127	157	118	157
क्षमता के प्रतिशत के रूप में मांग	%	115	115	87	92	92

परियोजना के विस्तार के समय कंपनी द्वारा संचालित किए गए परियोजना एवं बाजार अध्ययन के अनुसार घरेलू उद्योग द्वारा आंकी गई उत्पाद की अनुमानित मांग 48000 मी. टन थी।

### भंडार सूचियाँ

38. यह नोट किया गया है कि याचिकाकर्ता ने वर्ष 2001-02 तक वस्तु सूचियों का स्तर बहुत कम रखा था। ऐसा क्षमता में वृद्धि के फलस्वरूप उत्पादन में उल्लेखनीय वृद्धि के बावजूद किया गया था। तथापि, उत्पादन में कटौती एवं बिक्री कीमतों के घटाए जाने के बावजूद जांच की अवधि में बिक्री मात्रा में आई गिरावट के परिणामस्वरूप भंडार सूचियों में वृद्धि हुई है। इसके अतिरिक्त जांचाधीन अवधि के दौरान बिक्री मात्रा के प्रतिशत के रूप में, भंडार सूची में 1.40% से 6.02% की वृद्धि हुई है।

भंडार सूची पर वास्तविक एवं संभाव्य नकारात्मक प्रभाव				
	2000-01	2001-02	2002-03	जांच अवधि वार्षिकीकृत
भंडार सूची/स्टॉक	****	****	****	*****
बिक्री मात्रा मी.टन	****	****	****	*****
बिक्री मात्रा का भंडार सूची %	1.40	0.50	3.55	6.02
सूचीबद्ध	100.00	48.24	324.49	567.35

### नकद प्रवाह

39. घरेलू उद्योग एक बहु-उत्पाद कंपनी है। उनके संपूर्ण व्यवसाय में संबद्ध उत्पाद का हिस्सा 21% है। इसके पश्चात् भी निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा कंपनी की नकद प्रवाह स्थिति का विश्लेषण किया गया तथा यह पाया गया कि कंपनी के प्रचालनों से होने वाले नकद प्रवाह में समग्र रूप से एक सकारात्मक प्रवृत्ति प्रदर्शित होती है, जबकि संबद्ध वस्तुओं के नकद लाभ में, जो पहले बेहतर स्थिति में था, में जांच की अवधि के दौरान गिरावट आई है। तथापि, जैसा कि पूर्व में उल्लिखित है, घरेलू उद्योग के इस दावे के बावजूद कि जांच अवधि के दौरान संबद्ध वस्तुओं के लिए उसे प्रतिकूल नकद प्रवाह का सामना करना पड़ा है, निर्दिष्ट प्राधिकारी उपलब्ध साक्ष्यों के आधार पर इस मानदंड के अनुसार क्षति का निर्धारण नहीं कर सके।

### घरेलू उद्योग की बिक्री मात्रा एवं बाजार हिस्सा

40. घरेलू बाजार में घरेलू उद्योग की बिक्री में मात्रा के संदर्भ में 32% की वृद्धि हुई है। तथापि मूल्य के संदर्भ में प्रति इकाई वसूली में काफी गिरावट आई है।
41. तथापि, घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में जांच की अवधि में 2% की वृद्धि हुई। तथापि, जांच की अवधि के दौरान अन्य उत्पादकों के बाजार हिस्से में 24.8% से 17.2% की गिरावट आई है। आगे यह भी नोट किया गया है कि कुल आयातों में पाटित आयातों का हिस्सा जांच की अवधि के दौरान 8.82% से

बढ़कर 15.5% हो गया, वहीं गैर पाटित आयातों में 6.95% से 4.83% तक की गिरावट आई है।

वर्ष	2000-01	2001-02	2002-03	जांच अवधि वार्षिकीकृत
घरेलू उद्योग की बिक्री	****	****	****	****
प्रवृत्ति	100	135.01	138.92	132.38

यह देखा गया है कि वर्ष 2000-01 तथा 2001-02 के दौरान बिक्री मात्रा में उल्लेखनीय वृद्धि हुई थी। तथापि उसके पश्चात बिक्री मात्रा में गिरावट की प्रवृत्ति प्रदर्शित होती है। यद्यपि बिक्री में समग्र रूप से वृद्धि की प्रवृत्ति प्रदर्शित होती है, यह पाया गया है कि क्षमता संवर्धन एवं खपत में वृद्धि के बावजूद घरेलू उद्योग की बिक्री मात्रा इष्टतम से कम रही है, जैसा कि निम्नलिखित सारणी से देखा जा सकता है। उपर्युक्त से यह स्पष्ट है कि क्षमता संवर्धन के परिणामस्वरूप तथा देश में मांग के बावजूद भी घरेलू उद्योग की बिक्री में वृद्धि नहीं हुई है।

	मांग में घरेलू उद्योग का बाजार हिस्सा			
	2000-01	2001-02	2002-03	जांच अवधि वार्षिकीकृत
<u>धारित %</u> <u>हिस्सा</u>				
घरेलू उद्योग	59.44	62.99	63.88	62.41
भारतीय उद्योग	84.23	84.87	82.04	79.61
अन्य उत्पादक	24.8	21.9	18.2	17.2
पाटित वस्तुएं	8.82	7.96	14.18	15.55
अन्य आयात	6.95	7.17	3.79	4.83

#### 42. वृद्धि:

जांच अवधि के दौरान संबद्ध वस्तुओं की मांग में उल्लेखनीय वृद्धि प्रदर्शित हुई है। ऐसा प्रतीत होता है कि घरेलू उद्योग द्वारा इसका अनुमान लगाया जा चुका था (जैसा कि उनकी व्यवहार्यता रिपोर्ट से संकेत मिलता है), जिसके परिणामस्वरूप क्षमता में वृद्धि की गई थी। यद्यपि प्रारंभिक दौर में घरेलू उद्योग में सकारात्मक एवं लाभप्रद वृद्धि प्रदर्शित हुई थी परंतु जांच की अवधि में घरेलू

उद्योग की वृद्धि मंद हो गई थी तथा घरेलू उद्योग ने बाजार के विकास के बावजूद नकारात्मक वृद्धि दर्ज की थी, जैसा कि नीचे दी गई सारणी से देखा जा सकता है:-

वर्ष	इकाई	2000-01	2001-02	2002-03	अक्टू.02-जून02	जांच अवधि वार्षिकीकृत
मांग में वृद्धि %	-	5.49	17.18	17.64	17.64	
आधार वर्ष से बिक्री में वृद्धि %	-	35.01	38.92	32.38	32.38	
आधार वर्ष से कारोबार में वृद्धि %	-	20.71	25.79	15.61	15.61	
आधार वर्ष से लाभ में वृद्धि %	-	44.86	-30.90	-26.61	-26.61	

### बिक्री कीमत

43. वर्ष 2000-01 तथा जांच की अवधि के दौरान घरेलू बाजार में उत्पादित एवं बेची गई संबद्ध वस्तु के संबंध में घरेलू उत्पादक की औसत निवल बिक्री कीमत 12% तक घट गई थी ।
44. वर्ष 2000-01 से 2001-02 के दौरान बिक्री कीमत में 10% की गिरावट आई और 2001-02 से 2002-03 के दौरान 3.4% की वृद्धि हुई परन्तु जांच अवधि के दौरान उसमें काफी गिरावट आई ।

पाटित आयातों की औसत कीमत (तभी जोड़ी जाए जब संचित हो) घरेलू उद्योग का सीआईएफ तथा उत्पादन लागत

	2000-01	2001-02	2002-03	जांच अवधि वार्षिकीकृत
पाटित की सीआईएफ कीमत रु./मी.टन	****	****	****	****
उत्पादन लागत (घरेलू उद्योग)	****	****	****	****
घरेलू कीमतें	****	****	****	****

पाटित आयतों की औसत कीमत तथा घरेलू उद्योग की उत्पादन लागत				
	2000-01	2001-02	2002-03	जांच अवधि वार्षिकीकृत
सूचीबद्ध(आयत कीमत)	100.0	93.1	93.6	91.6
सूचीबद्ध (उत्पादन लागत-घरेलू उद्योग)	100.0	86.4	90.3	105.4
घरेलू कीमतें	100.0	89.4	93.8	87.3

45. बिक्री कीमत के क्रमविकास को इकाई उत्पादन लागत के क्रमविकास के साथ तुलनात्मक रूप में देखा जाना चाहिए। वर्ष 2000-01 तथा 2001-02 के बीच घरेलू उद्योग की इकाई उत्पादन लागत में 13% की गिरावट आई। तथापि, 2001-02 से जांच अवधि में उसमें 22% की वृद्धि हुई जोकि मुख्य रूप से निविष्टियों/कच्चे माल की लागत में वृद्धि होने के कारण थी। इसलिए यह नोट किया गया है कि विचाराधीन अवधि के दौरान जहाँ संबद्ध वस्तु की इकाई उत्पादन लागत में 5% की वृद्धि हुई वहीं उसकी बिक्री कीमत में 12% अधिक की गिरावट आई। प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि फर्म ने रोजगार में कमी करके लागत में कमी करने के प्रति दृढ़ कदम उठाए हैं। तथापि, विचाराधीन अवधि के दौरान इकाई उत्पादन लागत में वृद्धि होने के बावजूद पाटित आयतों के कारण घरेलू उद्योग पर कीमतों को कम करने का दबाव पड़ा।

### रोजगार

46. यद्यपि याचिकाकर्ता ने यह दावा किया है कि पाटन के कारण उसके रोजगार के स्तर में कमी हुई तथापि प्राधिकारी यह मानते हैं कि याचिकाकर्ता एक बहु उत्पाद कंपनी है, अतः कंपनी का रोजगार स्तर स्वभावतः घरेलू उद्योग की क्षति का निर्णायक संकेतक नहीं भी हो सकता है।

रोजगार एवं भत्तों पर वास्तविक एवं संभावित नकारात्मक प्रभाव				
	2000-01	2001-02	2002-03	जांच अवधि वार्षिकीकृत
कर्मचारियों की संख्या	****	****	****	****
%परिवर्तन		-3.78	-7.55	-7.55
बिक्री/रोजगार की मात्रा	29.0	40.7	40.2	41.5
निवेश पर आय एवं नकद लाभ				
	2000-01	2001-02	2002-03	जांच अवधि वार्षिकीकृत
%आय	4-10	6-12	5-8	-1-5
वार्षिक वृद्धि %		2.70	-1.81	-7.65
सूचकांक	100.00	147.34	115.67	-18.28
वास्तविक नकद लाभ	****	****	****	***
वार्षिक वृद्धि %		****	****	***
सूचकांक	100.00	141.69	162.06	5.48
लगाई गई पूँजी				
	2000-01	2001-02	2002-03	जांच अवधि वार्षिकीकृत
लाख रु. में	****	****	****	***
सूचीबद्ध	100.00	98.88	144.84	144.84

### उत्पादकता

47. वर्ष 2000-01 से जांच अवधि के बीच प्रति वर्ष नियुक्त प्रति व्यक्ति उत्पादन के रूप में मापी जाने वाली उत्पादकता में विचाराधीन अवधि के दौरान 25% की वृद्धि हुई। उत्पादकता में वृद्धि को घरेलू उद्योग के कर्मचारियों की संख्या में कमी की पृष्ठभूमि में देखा जा सकता है।

उत्पादकता		2000-01	2001-02	2002-03	जांच अवधि वार्षिकीकृत
कारोबार लाख रु. में	****	****	****	***	
कर्मचारी	****	****	****	***	
उत्पादकता%	****	****	****	***	
सूचकांक	100	125.45	130.22	125.05	

वेतन

48. लगभग 3 वर्षों की अवधि में घरेलू उद्योग द्वारा दिए जाने वाले वेतन और मजदूरी में 20% की वृद्धि प्रदर्शित होती है जिसके परिणामस्वरूप वार्षिक मजदूरी में लगभग 6.33% की वृद्धि हुई है। ऐसा प्रतीत नहीं होता कि मजदूरी में ऐसी वृद्धि अस्वाभाविक थी। किसी भी मामले में प्रति कि.ग्रा. उत्पादन की मजदूरी में गिरावट आई जैसा कि नीचे दी गई तालिका से देखा जा सकता है।

वर्ष	इकाई	2000-01	2001-02	2002-03	जांच अवधि	जांच अवधि वार्षिकीकृत
कुल मजदूरी	रु./लाख	****	****	****	****	****
प्रति कर्मचारी मजदूरी	रु./लाख	****	****	****	****	****
सूचकांक		100	115.1	119.8	89.6	119.8
प्रति इकाई उत्पादन मजदूरी	रु.प्रति कि.ग्रा.	****	****	****	****	****
सूचकांक		100	81.6	78.9	84.0	84.0

घरेलू कीमतों को प्रभावित करने वाले कारक

49. ईयू से आयातों के परिणामस्वरूप भारतीय बाजार में कीमत में अत्यधिक कटौती हो रही है। संबद्ध देशों के मामले में आयातों की पहुंच कीमत घरेलू उद्योग की क्षतिरहित कीमत से कम है। जैसा कि नीचे दी गई तालिका से देखा जा सकता है, घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत में गिरावट आई है।

वर्ष	2000-01	2001-02	2002-03	अक्तू-02-जून02	वार्षिकीकृत
निवल बिक्री प्राप्ति	****	****	****	****	****
प्रवृत्ति	100.00	89.41	90.55	87.33	87.33

जैसा कि ऊपर दी गई तालिका से देखा जा सकता है, उपरोक्त गिरावट उत्पादन लागत में वृद्धि के बावजूद हुई है। आयातों के कारण बाजार में कीमतों पर दबाव पड़ रहा था।

### लाभप्रदता

50. जैसा कि नीचे तालिका में दिया गया है, निवल बिक्रियों पर कर के पूर्व लाभ/हानि के रूप में विचाराधीन अवधि में असंबद्ध ग्राहकों को घरेलू उद्योग की बिक्रियों की लाभप्रदता में अत्यधिक गिरावट आई है।

वर्ष	2000-01	2001-02	2002-03	जांच अवधि	जांच अवधि वार्षिकीकृत
प्रति इकाई लाभ/हानि(रु/मी.ट)	****	****	****	****	****
सूचकांक	100	107.29	49.74	-20.10	-20.10
ब्याज के पूर्व प्रति इकाई लाभ/हानि(रु/मी.टन)	****	****	****	****	****
सूचकांक	100	97.6	55.2	9.7	9.7
ब्याज पूर्व कुल लाभ/हानि (लाख रु.)	****	****	****	****	****
सूचकांक	100	131.8	76.7	9.6	12.8
ब्याज के बाद निवल लाभ/हानि (लाख रु.)	****	****	****	****	****
सूचकांक	100	144.86	69.10	-19.96	-26.61

इसके अतिरिक्त यह नोट किया गया है कि जैसा कि ऊपर दर्शाया गया है, क्षति की अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के लाभों में बहुत अधिक घाटा हुआ है। घरेलू उद्योग, जिसे पूर्व में लाभ हो रहा था, अब उसे वित्तीय घाटा हो रहा है।

निवेश पर आय:

51. जैसाकि नीचे दी गई तालिका से देखा जा सकता है, निवेश पर आय में 2000-01 तथा 2001-02 के बीच वृद्धि के बाद अत्यधिक गिरावट आई है।

निवेश पर आय एवं नकद प्रवाह				
	2000-01	2001-02	2002-03	जांच की अवधि वार्षिकीकृत
% आय	****	****	****	***
सूची	100.00	147.34	115.67	-18.28
वास्तविक नकद लाभ	****	****	****	***
सूची	100.0	141.69	162.06	5.48

लगाई गई पूँजी				
	2000-01	2001-02	2002-03	जांच की अवधि वार्षिकीकृत
लाख रु० में	****	****	****	***
सूचीबद्ध	100.00	94.70	159.93	158.07

वर्ष	इकाई	2000-01	2001-02	2002-03	जांच अवधि
कार्यशील पूँजी	लाख रु.	****	****	****	****
सूची		100	85.59	78.96	78.96
लगाई गई पूँजी पर आय	लाख रु.	****	****	****	****
सूची		100	139.14	48.01	8.11

यह देखा गया है कि घरेलू उद्योग लाभ की जगह हानि की स्थिति में है जिसके परिणामस्वरूप पूर्ववर्ती वषों में निवेश पर तर्कसंगत आय की स्थिति की तुलना में जांच अवधि में निवेश पर नकारात्मक आय प्राप्त हुई है।

### पूंजी जुटाने की क्षमता

52. याचिकाकर्ता एक बहुउत्पाद कंपनी है। इसके अलावा, याचिकाकर्ता ने संबद्ध वस्तुओं के उत्पादन तथा बिक्री के लिए अपनी क्षमता को हाल ही में बढ़ाया है। प्राधिकारी यह नहीं मानते हैं कि पाटन के परिणाम के रूप में पूंजी निवेश जुआने की क्षमता पर कोई प्रभाव पड़ा है। तथापि, आम तौर पर यह माना जाता है कि घरेलू उद्योग के निरंतर प्रतिकूल निष्पादन से घरेलू उद्योग की निधियां जुटाने की क्षमता पर विपरीत प्रभाव पड़ेगा।

### पाटन मार्जिन का परिमाण

53. प्रत्येक संबद्ध देश से पाटन मार्जिन का परिमाण काफी अधिक है जैसाकि पूर्ववर्ती पैराग्राफ में कोरिया जन.गण. को छोड़कर परिकलित किया गया है।

### संविदाओं को गंवाने के साक्ष्य

54. प्राधिकारी संविदाओं को गंवाने के आधार पर क्षति के संबंध में कोई प्रत्यक्ष साक्ष्य प्राप्त नहीं कर सके। इसलिए प्राधिकारी इस मानदण्ड के आधार पर घरेलू उद्योग को हुई क्षति के संबंध में किसी निष्कर्ष पर नहीं पहुंच सके।

### निष्पादन की तिमाही तुलना

55. समूची क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की वर्षवार आधार पर जांच के अलावा अप्रैल-जून, 2002 से अप्रैल-जून 2003 के बीच घरेलू उद्योग के निष्पादन की तिमाही आधार पर जांच को उपयुक्त माना गया था। ऐसा आयातों में तिमाही आधार पर तीव्र वृद्धि तथा इसके परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग पर विपरीत प्रभाव के मद्देनजर किया गया था। यह पाया गया था कि तिमाही आधार पर घरेलू उद्योग के निष्पादन में बहुत तेजी से गिरावट आई। जहां दिसंबर 2002 को समाप्त तिमाही तक मात्रात्मक मापदण्डों में सुधार हुआ तथा

तत्पश्चात् गिरावट आई वहीं इन सभी तिमाहियों के दौरान कीमत मापदण्डों में लगातार गिरावट आई जिसे नीचे दी गई तालिका से देखा जा सकता है।

मापदण्ड	अप्रैल 02- जून 02	जुलाई 02- सित. 02	अक्टू. 02- दिस. 02	जन 03- मार्च 03	अप्रैल-03- जून 03
उत्पादन मी.टन	****	****	****	****	****
प्रवृत्ति	100.0	108.3	111.0	80.2	90.2
क्षमता उपयोग%	78.30	90.69	86.90	62.81	70.59
प्रवृत्ति/सूची	100	115	111	80	90
बिक्री मी.टन	****	****	****	****	****
प्रवृत्ति/सूची	100.0	120.8	129.8	127.3	84.5
उत्पादन की इकाई लागत रु./मी.टन	****	****	****	****	****
प्रवृत्ति /सूची	100.0	113.0	121.6	125.9	127.3
इकाई बिक्री मूल्य रु./मी.टन	****	****	43500	45224	43434
सूची	100	99.4	91.5	95.1	91.3
इकाई लाभ/हानि रु./मी.टन	****	****	****	****	****
सूची	100	54.0	-8.9	-7.4	-28.5
कुल लाभ/हानि लाख रु.	****	****	****	****	****
प्रवृत्ति/सूची	100	65.2	-11.6	-9.4	-24.1

### क्षति संबंधी निष्कर्ष

56. उपर्युक्त के महेनज़र प्राधिकारी का निष्कर्ष यह है कि संबद्ध देश से संबद्ध वस्तुओं के आयात में निरपेक्ष रूप से तथा साथ ही भारत में पी वी सी पेरस्ट रेजिन के कुल आयातों के संबंध में तथा साथ ही भारत में पी वी सी पेरस्ट रेजिन की मांग के संबंध में तथा घरेलू उत्पादन के संबंध में भी पर्याप्त वृद्धि हुई है। यह भी निर्धारण किया गया कि संबद्ध देशों से आयातों के कारण घरेलू उद्योग की बिक्री कीमतों में कटौती हो रही है। याचिकाकर्ता को कम कीमत पर बिक्री भी करनी पड़ रही है क्योंकि संबद्ध वस्तु के पहुंच मूल्य घरेलू उद्योग की क्षतिरहित कीमत अथवा उचित बिक्री कीमत से कम हैं। याचिकाकर्ता को इसके अतिरिक्त कीमत ह्रास का सामना करना पड़ रहा है क्योंकि संबद्ध देश से संबद्ध वस्तु के पहुंच मूल्य ने घरेलू उद्योग की घरेलू बिक्री कीमत पर एक न्यूनकारी दबाव बनाया है। विचाराधीन अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत में गिरावट आई है। घरेलू उद्योग को संबद्ध वस्तु की बिक्री की दृष्टि से घाटा सहना पड़ा है। वस्तुतः उन्हें जांच अवधि के दौरान घाटा वहन करना पड़ा है। वस्तुतः क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग का निष्पादन काफी खराब रहा है। लाभों (पर्याप्त लाभ के स्थान पर वित्तीय घाटा होना), नकद लाभ(95% की गिरावट), लगाई गई पूँजी पर आय (सूचकांक आधार पर 100 से घटकर 5), बिक्री कीमत (सूचकांक आधार पर 100 से घटकर 87.3), स्टॉक में वृद्धि (बिक्री के 1.4% से बढ़कर बिक्री का 6.02%), संबंधी स्थिति काफी खराब होने, क्षमता उपयोग में गिरावट आने से यह पता चलता है कि घरेलू उद्योग को जांच अवधि के दौरान वास्तविक क्षति हुई है। यद्यपि विचाराधीन अवधि के दौरान उत्पादकता में वृद्धि के साथ-साथ उत्पादन की मात्रा एवं बिक्री मात्रा में वृद्धि हुई है, तथापि घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है क्योंकि घरेलू उद्योग का वित्तीय निष्पादन खराब रहा है जबकि इन कारकों से घरेलू उद्योग की लाभप्रदता को बढ़ाने में मदद मिलनी चाहिए थी। यद्यपि घरेलू उद्योग की मजदूरी में वृद्धि हुई थी, तथापि उससे घरेलू उद्योग की क्षति में कोई योगदान नहीं मिल सका क्योंकि उत्पादन की प्रति यूनिट मजदूरी में गिरावट आयी। यद्यपि घरेलू उद्योग को उत्पादन में किसी गिरावट का सामना नहीं करना पड़ा है, तथापि विचाराधीन अवधि के दौरान उसके क्षमता उपयोग तथा मालसूची बिक्री कारोबार अनुपात में गिरावट आई है। यद्यपि घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में कुल मांग की तुलना में वृद्धि हुई है तथा उसकी बिक्री में विचाराधीन अवधि के दौरान वृद्धि हुई है तथापि समूची विचाराधीन अवधि के दौरान उनकी बिक्री कीमतों में गिरावट आई तथा बिक्री कीमतों में यह गिरावट

इस तथ्य के मद्देनजर काफी अधिक थी कि संबद्ध वस्तुओं के उत्पादन की इकाई लागत में विचाराधीन अवधि के दौरान वृद्धि हुई है। यह भी निर्धारण किया गया कि विचाराधीन अवधि के दौरान रोजगार में तथा साथ ही मजदूरी में गिरावट आई है। तथापि उपर्युक्त कारणों के चलते फर्म उसकी उत्पादकता में सुधार दर्ज होने के बावजूद संबद्ध वस्तुओं की बिक्री की दृष्टि से लगातार घटा उठा रही है। उपर्युक्त के आधार पर, प्राधिकारी यह पाते हैं कि घरेलू उद्योग को मात्रात्मक साथ ही साथ कीमत संबंधी क्षति का सामना करना पड़ा। कुल मिलाकर, घरेलू उद्योग को संबद्ध देशों से पाठित आयातों के कारण वास्तविक क्षति हुई है।

#### कारणात्मक संबंध

##### (क) भूमिका

57. घरेलू उद्योग द्वारा उठाई गई क्षति के कारण पर किसी निष्कर्ष तक पहुंचने के लिए तथा पाटनरोधी संबंधी करार के अनुच्छेद 3.5 तथा यथासंशोधित सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम के अन्तर्गत नियम 11 के अन्तर्गत अनुबंध II के पैरा (v) के अनुसार प्राधिकारी ने सभी ज्ञात कारकों के प्रभाव तथा उद्योग पर उनके परिणामों की जांच की थी। पाठित आयातों से इतर ज्ञात कारकों जिनसे उसी समय घरेलू उद्योग को क्षति पहुंच सकती थी, की भी यह सुनिश्चित करने के लिए जांच की गई कि इन अन्य कारकों से हुई संभावित क्षति के लिए पाठित आयात जिम्मेदार तो नहीं थे।

##### (ख) पाठित आयातों के प्रभाव

58. वर्ष 2000-01 तथा जांच अवधि के बीच, संबद्ध देशों से पाठित आयातों में मात्रा के रूप में 222% तक तथा बाजार हिस्से के रूप में 76% तक (वर्ष 2000-01 में 8.8% से जांच अवधि में 15.6%) पर्याप्त रूप से वृद्धि हुई। जहां तक निर्यात कीमतों का संबंध है उनमें समूची विचाराधीन अवधि के दौरान काफी गिरावट आई तथा उनसे जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की कीमतों में 1-3% के औसत से कटौती हुई। इसके अलावा, कटौती किए गए आंकड़ों से पाठित आयातों के सम्पूर्ण प्रभाव का प्रदर्शन नहीं हुआ था क्योंकि घरेलू

उद्योग की कीमतों का ह्लास हुआ । यह सब घरेलू उद्योग की स्थिति में गिरावट के साथ कीमत में कमी तथा लाभप्रदता में गिरावट के रूप में हुआ ।

59. समूची विचाराधीन अवधि के दौरान पाटित आयातों की कीमतें घरेलू उद्योग की कीमतों से कम रहीं थीं तथा इस पर एक दबाव बनाया जिससे उत्पादन की लागत में वृद्धि होने के बावजूद घरेलू उद्योग को कीमतें घटाने पर बाध्य होना पड़ा । इसलिए यह माना जाता है कि पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई ।

(ग) अन्य कारकों के प्रभाव

(क) अन्य घरेलू उत्पादकों का निष्पादन

60. विचाराधीन अवधि के दौरान याचिकाकर्ता के अतिरिक्त, संबद्ध वस्तु का दूसरा घरेलू उत्पादक मै फिनोलैक्स इंडस्ट्रीज लिमिटेड, पुणे था । यह तर्क दिया गया कि मै० केमप्लास्ट ने पाटित आयातों के बारे में शिकायत दर्ज कराई थी तथा दूसरे घरेलू उत्पादक मै० फिनोलैक्स को कोई क्षति नहीं हुई थी । यह भी तर्क दिया गया कि मै० फिनोलैक्स इंडस्ट्रीज लिमिटेड याचिकाकर्ता के विपरीत एकल उत्पाद कंपनी है तथा घरेलू उद्योग को हुई वास्तविक क्षति के बारे में किसी अंतिम निष्कर्ष पर पहुंचने के पूर्व प्राधिकारी द्वारा दूसरे उत्पादक को हुई क्षति का विश्लेषण किया जाना चाहिए । तदनुसार, मै० फिनोलैक्स को क्षति निर्धारण संबंधी सूचनाएं प्रदान करने का निर्देश दिया गया था । फिनोलैक्स ने कुछ जानकारी मुहैया कराई थी जिसका प्राधिकारी द्वारा सत्यापन किया गया था । यह नोट किया गया कि मै० फिनोलैक्स इंडस्ट्रीज लिमिटेड एक बहुउत्पाद कंपनी है जिसके कुल कारोबार में संबद्ध वस्तु का हिस्सा बहुत छोटा है । यद्यपि क्षति संबंधी सभी मानदण्डों की दृष्टि से फिनोलैक्स द्वारा मुहैया कराई गई सूचना पूरी नहीं है तथापि कंपनी ने क्षति संबंधी कुछेक मानदण्डों के बारे में सूचना दी है जिनका विश्लेषण नीचे किया गया है:-

वर्ष	2000-01	2001-02	2002-03
		केवल आठ माह का कार्य	

क्षमता	10000	6667	10000
उत्पादन	****	****	****
सूची	100	68.5	67.0
क्षमता उपयोग	****	****	****
सूची	100	102.5	65.5
घरेलू बिक्री	****	****	****
सूची	100	53.71	63.81
लाभ/हानि		****	****
सूची		100	-3.42

उपर्युक्त से यह देखा गया है कि फिनोलैक्स के निष्पादन में भी भौतिक रूप से गिरावट आई है। वास्तव में, फिनोलैक्स ने बिक्री मात्रा गंवाई है, तथा उसे अपने उत्पादन तथा क्षमता उपयोग को बढ़ाने से रोका गया है तथा उसने उत्पादन तथा क्षमता उपयोग में गिरावट की वास्तव में सूचना दी है। कीमत संबंधी प्रभाव के संबंध में यह पाया गया है कि फिनोलैक्स को भी वित्तीय घाटा सहन करना पड़ा है। वास्तव में कंपनी द्वारा उठाए गए वित्तीय केम्प्लास्ट द्वारा उठाए गए वित्तीय घाटों की तुलना में अधिक हैं। इसलिए संबद्ध वस्तु का उत्पादन करने वाले अन्य घरेलू उत्पादकों के निष्पादन का, घरेलू उद्योग के निष्पादन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा था।

(ख) स्व-आरोपित क्षति, पैमाने की किफायतें एवं लागत दक्षता:

61. यह तर्क दिया गया है कि लागत ढांचा, क्रय नीति, संविदा नियम और याचिकाकर्ता की अन्य मदों के अपने उत्पादन को प्रयोग करने की नीति के कारण पी वी सी पेरस्ट रेजिन परिसंपत्तियों का लदान प्रतिबंधित हुआ है जिसके कारण मुख्यतः कथित क्षति, यदि कोई हो, हुई है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि उन्होंने संबद्ध वस्तु की उत्पादन लागत एवं उसकी क्षतिरहित कीमत का निर्धारण कंपनी के अन्य व्यवसाय से संबंधित किसी ऊपरी व्यय पर विचार किए बिना घरेलू उद्योग के आंकड़ों का सत्यापन करके संबद्ध वस्तु की वास्तविक उत्पादन लागत को ध्यान में रखकर किया है।

## (घ) मांग में संकुचन या खपत की पद्धति में परिवर्तन

62. प्राधिकारी नोट करते हैं कि विचाराधीन अवधि के दौरान समग्र मांग में कोई संकुचन नहीं हुआ है। इसके विपरीत समग्र मांग में 2001-01 से जांच अवधि तक 26% की वृद्धि हुई है। अतः प्राधिकारी का यह भी निष्कर्ष है कि खपत की पद्धति में कोई प्रत्यक्ष परिवर्तन नहीं हुआ है।

## (ड.) पाटित कीमतों पर नहीं बचे गए आयातों की मात्रा तथा कीमतें

63. गैर-संबद्ध आयातों के विश्लेषण से पता चलता है कि ऐसे आयात बहुत ही निम्न स्तर पर रहे हैं। इसके अलावा, इन स्रोतों में से कुछ की आयात कीमतें जांच अवधि में काफी अधिक थीं। मलेशिया, जापान और थाइलैंड से आयात कीमतें कम थीं और संबद्ध देशों से आयातों के तुलनीय थीं। तथापि इन देशों का अलग-अलग हिस्सा आयात मात्राओं के 3% से कम था और इनका सामूहिक हिस्सा आयात मात्राओं के 7% से कम था। याचिकाकर्ता ने विभिन्न स्रोतों से आयातों से संबंधित विस्तृत सूचना उपलब्ध करायी थी और जांच अवधि के दौरान गैर-संबद्ध स्रोतों से कम कीमतों पर आयातों संबंधी कोई आरोप नहीं लगाया गया। वास्तव में संबद्ध देशों से इतर सभी देशों से गैर-पाटित आयातों के हिस्से में कुल मांग में और कुल आयातों के हिस्से में भी कमी आई। पूर्वोक्त के मद्देनजर यह नोट किया जाता है कि गैर संबद्ध देशों से आयातों का घरेलू उद्योग पर प्रभाव नहीं पड़ा है।

## (च) व्यापार प्रतिबंधात्मक प्रथाएं तथा विदेशी और घरेलू उत्पादकों के बीच प्रतिस्पर्द्ध

64. प्राधिकारी नोट करते हैं कि संबद्ध वस्तु के लिए एक अकेला बाजार है जहां संबद्ध देशों से पाटित आयात घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित संबद्ध वस्तु के साथ प्रत्यक्ष रूप से प्रतिस्पर्द्ध करते हैं। संबद्ध देशों से सौदेवार आयातों तथा संबद्ध देशों के सहयोगी निर्यातक द्वारा प्रस्तुत किए गए आंकड़ों की जांच के आधार पर यह लगता है कि कीमत से आपूर्तिकर्ता की पसन्द का निर्धारण होता है क्योंकि पाटित संबद्ध वस्तुएं घरेलू उत्पादक के लिए समान उत्पाद हैं। व्यापार प्रतिबंधात्मक प्रथाओं संबंधी कोई आरोप नहीं है। संभावित मामले या एमआरटीपी आदि के अंतर्गत शिकायत जैसा कोई आरोप निर्दिष्ट प्राधिकारी के

ध्यान में नहीं आया है। भारत में केवल दो उत्पादक हैं और जैसाकि पूर्व में उल्लेख किया गया है, दोनों ने पाटित आयातों के परिणामस्वरूप क्षति उठायी है। यह लगेगा कि केमप्लास्ट की बिक्री कीमत फिनोलैक्स की बिक्री कीमत से अधिक है। तथापि, इससे इस बात की पुष्टि नहीं होती है कि केमप्लास्ट को फिनोलैक्स की कम कीमतों के परिणामस्वरूप क्षति पहुंची है। वास्तव में, फिनोलैक्स ने केमप्लास्ट से कम कीमतें होने के बावजूद बिक्रियां और उत्पादन मात्राएं गंवा दी हैं। इसके अलावा यह भी नोट किया जाता है कि घरेलू रूप से उत्पादित संबद्ध वस्तुओं के समान वाणिज्यिक ग्रेडों तथा विनिर्देशन का मुकाबला करने के लिए आयातित उत्पाद को बेचा जाता है। यह भी नोट किया जाता है कि आयातित संबद्ध वस्तुएं और घरेलू रूप से उत्पादित वस्तुएं समान वस्तुएं हैं तथा इनको समान अनुप्रयोगों/उद्देश्यों के लिए प्रयोग किया जाता है।

(छ) प्रौद्योगिकी विकास निर्यात कार्य-निष्पादन और घरेलू उद्योग की उत्पादकता

65. हितबद्ध पक्षकारों में से किसी ने भी इस तथ्य के संबंध में कोई तर्क नहीं दिया है कि प्रौद्योगिकी में संभावित विकास घरेलू उद्योग को हो रही क्षति का संभावित कारण हो सकता था। याचिकाकर्ता के रिकार्डों की जांच के आधार पर प्राधिकारी का मानना है कि प्रौद्योगिकी विकास घरेलू उद्योग की क्षति के लिए प्रासंगिक कारक नहीं रहा है।
66. घरेलू उद्योग इस उत्पाद का निर्यात नहीं कर रहा है। निर्यात कार्य-निष्पादन में संभावित हास घरेलू उद्योग की क्षति का संभावित कारण नहीं है। इसलिए प्राधिकारी मानते हैं कि घरेलू उद्योग द्वारा उठायी गई क्षति घरेलू उद्योग के निर्यात कार्य-निष्पादन का परिणाम नहीं है।
67. जहां तक उत्पादकता में सुधार का संबंध है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि विचाराधीन अवधि के दौरान प्रतिवर्ष लगाए गए प्रति व्यक्ति उत्पादन में महत्वपूर्ण रूप से बढ़ोतरी हुई है। अतः उत्पादकता में संभावित हास घरेलू उद्योग की क्षति का कारण नहीं है। यह भी नोट किया जाता है कि उत्पादकता में बढ़ोतरी को घरेलू उद्योग के कर्मचारियों की संख्या में कमी की पृष्ठभूमि और घरेलू उद्योग द्वारा क्रियान्वित लागत में कमी करने वाले विभिन्न

उपायों के परिप्रेक्ष्य में भी देखा जा सकता है। जांच के आधार पर प्राधिकारी का मानना है कि फर्म ने बेहतर उत्पादकता के लिए कदम उठाए हैं और उत्पादकता स्वयं में घरेलू उद्योग की क्षति का कारण नहीं है।

#### (ज) कारणात्मक संबंधी निष्कर्ष

68. उपर्युक्त विश्लेषण जिसमें घरेलू उद्योग की स्थिति पर सभी ज्ञात कारकों के प्रभाव को पाटित आयातों के क्षतिकारी प्रभाव से समुचित रूप से अलग तथा विभक्त किया गया है, के मद्देनजर यह निष्कर्ष निकाला गया है कि ऐसे अन्य कारकों से यह तथ्य प्रतिवर्तित नहीं हुआ कि पायी गई वास्तविक क्षति के लिए पाटित आयातों को जिम्मेदार ठहराया जा सकता है।
69. अतः यह निष्कर्ष निकाला जाता है कि संबद्ध देशों के मूल के पाटित आयातों से पाटनरोधी नियमावली के नियम 11 और पाटनरोधी करार के अनुच्छेद 3.5 के अर्थ के भीतर घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है।

#### (झ) भारतीय उद्योग का हित:

70. पाटनरोधी शुल्क लगाने का उद्देश्य सामान्य तौर पर ऐसे पाटन को समाप्त करना है जिससे भारतीय उद्योग को क्षति हो रही है तथा भारतीय बाजार में ऐसी खुली एवं उचित प्रतिस्पर्धा की पुनःस्थिति लाना है जोकि देश के सामान्य हित में है।
71. प्राधिकारी यह मानते हैं कि पाटनरोधी शुल्क लगाने से संबद्ध वस्तुओं के उपयोग से विनिर्मित उत्पादों के कीमत स्तर प्रभावित होंगे और परिणामस्वरूप इन उत्पादों की तुलनात्मक प्रतिस्पर्धात्मकता पर प्रभाव पड़ सकता है। तथापि, पाटनरोधी उपायों से भारतीय बाजार में उचित प्रतिस्पर्धा कम नहीं होगी। इसके विपरीत पाटनरोधी उपायों को लागू करने से पाटन द्वारा प्राप्त हुए अनुचित लाभ समाप्त होंगे, भारतीय उद्योग का ह्लास रुकेगा और संबद्ध वस्तु के उपभोक्ताओं के लिए व्यापक विकल्प उपलब्ध रखने में मदद मिलेगी।

## क्षति मार्जिन

72. प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि सऊदी अरब के मामले में क्षति मार्जिन नकारात्मक है इसलिए सऊदी अरब से हुए आयातों के लिए किसी पाटनरोधी शुल्क का प्रस्ताव नहीं है।

### (अ) निष्कर्षः

73. प्राधिकारी पूर्वोक्त पर विचार करने के पश्चात इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि:-
- (क) संबद्ध देशों (ईयू और सऊदी अरब) से संबद्ध वस्तुओं का भारत को निर्यात इनके सामान्य मूल्य से कम कीमत पर किया गया है।
  - (ख) घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है।
  - (ग) यह क्षति यूरोपीय संघ से पाटित आयातों के कारण हुई है।
  - (घ) सऊदी अरब से आयातों के मामले में क्षति मार्जिन नकारात्मक है। सऊदी अरब से आयातों के मामले में क्षति मार्जिन नकारात्मक है।
74. प्राधिकारी घरेलू उद्योग की क्षति को दूर करने के लिए संबद्ध देशों से पी वी सी पेरस्ट रेजिन के सभी आयातों पर पाटनरोधी शुल्क लगाना आवश्यक समझते हैं। प्राधिकारी द्वारा निर्धारित पाटन मार्जिन उपर्युक्त पैराग्राफों में दर्शाया गया है। प्राधिकारी पाटन मार्जिन के बराबर या उससे कम पाटन रोधी शुल्क की राशि की सिफारिश करने का प्रस्ताव करते हैं जिसे यदि लगाया जाता है तो उससे घरेलू उद्योग को हुई क्षति समाप्त हो जाएगी। ६ का निर्धारण करने के प्रयोजनार्थ आयातों के पहुंच मूल्य की तुलना जांच अवधि के लिए निर्धारित याचिककर्ता कंपनी की क्षति रहित कीमत के साथ करने का प्रस्ताव है। प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि सऊदी अरब के मामले में क्षति मार्जिन नकारात्मक है।
75. तदनुसार, प्राधिकारी सिफारिश करते हैं कि संबद्ध देशों के मूल की अथवा वहाँ से निर्यातित सीमाशुल्क शीर्ष 39042110 के अंतर्गत आने वाली पी वी सी

पेस्ट रेजिन के सभी आयातों पर केन्द्र सरकार द्वारा इस संबंध में जारी की जाने वाली अधिसूचना की तारीख से निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क लगाया जाए। अंतर्राष्ट्रीय बाजारों में संबद्ध वस्तु की कीमतों में व्यापक उतार-चढ़ाव को देखते हुए प्राधिकारी ने संदर्भ कीमत आधार पर पाटनरोधी शुल्क का प्रस्ताव करना उचित समझा है। पाटनरोधी शुल्क निम्नलिखित तालिका के कॉलम 3 में उल्लिखित राशि तथा नीचे उल्लिखित देशों के मूल की अथवा वहां से निर्यातित सीमाशुल्क टैरिफ के अध्याय 39 के अंतर्गत आने वाली संबद्ध वस्तुओं के सभी आयातों पर इस संबंध में केन्द्र सरकार द्वारा जारी की जाने वाली अधिसूचना की तारीख से लागू प्रति मीटन आयातों के पहुंच मूल्य के बीच का अन्तर होगा:-

क्र सं	उप-शीर्ष अथवा टैरिफ मद	माल का विवरण	विनिर्देशन	उद्गम का देश	देश/संघ का निर्यात	उत्पादक	निर्यातक	राशि	माप की इकाई	मुद्रा
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11
1	39042110	पीवीसी पेस्ट रेजिन	कोई विनिर्देशन	ईयू	कोई	कोई	कोई निर्यातक	950.94	एम.टी	अम. डा.
2	39042110	पीवीसी पेस्ट रेजिन	कोई विनिर्देशन	कोई	ईयू	कोई	कोई निर्यातक	950.94	एम.टी	अम. डा.

76. इस उद्देश्य के लिए आयातों का पहुंच मूल्य सीमाशुल्क अधिनियम, 1962 के अधीन सीमाशुल्क विभाग द्वारा यथा निर्धारित आकलन योग्य मूल्य होगा और उसमें सीमाशुल्क अधिनियम, 1975 की धारा 3,3क, 8ख, 9 तथा 9क के तहत लगाए गए शुल्कों को छोड़कर सभी प्रकार के शुल्क शामिल होंगे।
77. इस आदेश के विरुद्ध कोई अपील उपर्युक्त अधिनियम के अनुसार सीमाशुल्क, उत्पाद शुल्क एवं सेवा शुल्क अपीलीय न्यायाधिकरण के समक्ष की जाएगी।
78. प्राधिकारी इस निश्चयात्मक उपाय को जारी रखने, इसमें परिवर्तन करने या इसको समाप्त करने, जैसा, इसमें अनुशंसित है, की आवश्यकता की इस अधिनियम के संगत प्रावधानों और इस संबंध में समय-समय पर जारी सार्वजनिक सूचनाओं, के अनुसार समय-समय पर समीक्षा कर सकते हैं। प्राधिकारी द्वारा ऐसी समीक्षा के लिए कोई भी अनुरोध स्वीकार नहीं किया जाएगा। यदि यह अनुरोध किसी हितबद्ध पक्षकार द्वारा इस प्रयोजनार्थ निर्धारित समय सीमा के भीतर नहीं किया जाता है।

अभिजित सेनगुप्त, निर्दिष्ट प्राधिकारी

**MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY**

(Department of Commerce)

(DIRECTORATE GENERAL OF ANTI-DUMPING AND ALLIED DUTIES)

**NOTIFICATION**

New Delhi, the 20th August, 2004

**Subject :— Anti-Dumping investigations concerning imports of PVC Paste Resin originating in or exported from the European Union, Korea RP and Saudi Arabia—Final Findings.**

Subject: Anti-dumping investigation concerning imports of PVC Paste Resin originating in or exported from the European Union, Korea RP and Saudi Arabia – Final Findings

**No. 14/14/2003/DGAD.—** Having regard to the Customs Tariff Act, 1975 as amended in 1995 and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti Dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules, 1995, thereof;

**A. PROCEDURE:**

1. The procedure described below has been followed:-

(i) The Designated Authority (hereinafter referred to as Authority), under the above Rules, received a written petition from M/s. Chemplast Sanmar Ltd, Chennai, on behalf of the domestic industry, alleging dumping of PVC Paste Resin originating in or exported from European Union, Korea RP and Saudi Arabia (hereinafter referred to as subject countries);

(ii) The Authority notified the Embassies/High Commissions of subject countries in India about the receipt of fully documented application made by the petitioner before proceeding to initiate the investigation in accordance with sub-rule (5) of Rule 5 supra;

(iii) The Authority issued a Public Notice dated 22<sup>nd</sup> August 2003 published in the Gazette of India, Extraordinary, initiating anti dumping proceedings concerning imports of PVC Paste Resin from subject countries.

(iv) The Authority forwarded copy of the said public notice to the known exporters, importers, industry associations and to the complainant and gave them an opportunity to make their views known in writing.

(v) According to sub-rule (3) of Rule 6 supra, the Authority provided a copy of the petition to all the known exporters and Embassies/High Commissions of subject country in India. M/s Hanwha Chemical Corporation Seoul, has responded to the application and submitted all the appendices to the exporter's questionnaire and also offered verification to the data submitted by them.

(vi) The Authority sent questionnaires, to elicit relevant information, to the following known exporters from European Union, Korea RP and Saudi Arabia .

1. LG chemicals Ltd, Seoul, Korea, RP
2. Vestolit GmBH & Co KG, Denmark
3. EVC Buisness Centre, UK
4. Vestolit GmBH & Co KG, Postfach, Germany
5. Solvin SA ; Brussels, Belgium
6. Vinnolit, Ismaning, Germany
7. SABIC, Riyadh
8. Alscondel, Barcelona

(vii) M/s LG Chemicals Ltd, has responded to the application filed by the M/s domestic Industry and initiation notification issued by the designated Authority and has submitted al the appendices pertaining to the exporters questionnaire and also offered for the verification of the data submitted by them. M/s SABIC Ltd, Riyadh submitted only part information to the Authority and has not submitted response in the form and manner required in the exporters questionnaire. However they offered price undertaking should the Authority come to a decision about the dumping and injury to the domestic industry. However, none of the other producers as well as the exporters have submitted any response to the exporters questionnaire as required in the form and manner and they have not responded to the any of the Appendices of the exporters response. In fact none of the producers as well as exporters participated in the public hearing which was held on 25<sup>th</sup> May 2004.

Though some arguments have been made by them with regards to the dumping and injury , they have not backed it up with any evidence or information. In view of their non cooperation , the Authority has treated all the exporters from EU and SABIC as non cooperative and has and worked out dumping margin as per the best information available. However the arguments presented by these exporters have been analysed to the extent these have been found relevant in this subject investigations.

(viii) The Embassies/High Commissions of subject countries in New Delhi were also informed about the initiation of investigation and requested to advise the exporters/producers from their countries to respond to the questionnaire within the prescribed time;

(ix) The questionnaire was sent to the large number of importers and arguments made by importers and users have been analysed by the Authority to the extent they have been found relevant for the subject investigation.

(x) The Authority kept available non-confidential version of the evidence presented by various interested parties in the form of a public file maintained by the Authority and kept open for inspection by the interested parties;

(xi) \*\*\*\* in this notification represents information furnished by the interested parties on confidential basis and so considered by the Authority under the Rules;

(xii) The investigation of dumping and injury covered the period from 1<sup>st</sup> October 2002 to 30<sup>th</sup> June 2003 (Also called the period of investigation or POI). The examination of trends in the context of injury analysis covered the period from 1<sup>st</sup> April 2000 to the end of period of investigation (also called period under consideration). The import data has been examined from IBIS, Mumbai , DGCIS and data submitted by the exporters and importers. However after examining all the data including the transaction wise data from DGCIS and IBIS, Mumbai, it was considered appropriate to rely on the information submitted by the exporters (cooperating), importers, and transaction wise data from the IBIS (international business information system), Mumbai as DGCIS data does not show the full imports volume from the subject countries and imports other than the subject goods are reflected in the DGCIS data .

(xiii) The Authority provided an opportunity to all interested parties to present their views orally on 25h May 2004. All parties presenting views orally were requested to file written submissions, of the views

expressed orally. Domestic verification as well as exporter's verification of the data submitted by them were undertaken by the Authority. The Authority sought and verified all the information it deemed necessary for the purpose of Final Findings with regards to determination of dumping and resulting injury. The Authority conducted on the spot investigation of the domestic industry to the extent considered necessary. The Authority also carried out on spot verification of the data submitted by cooperating exporters M/s LG Chem and M/s Hanwa Chemical Corporation, Seoul, South Korea and verified the data submitted by them. In accordance with Rule 16 of The Rule supra, the essential facts/ basis considered for these findings were disclosed to known interested parties on 4<sup>th</sup> August 2004 and comments received on the same are duly considered in Final Findings.

(xiv) The cost of the production of the domestic industry was also analysed to work out the optimum cost of the production and the cost to make and sell the subject goods in India on the basis of Generally Accepted Accounting Principles based on the information furnished by the petitioner so as to ascertain if anti Dumping duty lower than dumping margin would be sufficient to remove injury to the domestic Industry.

(xv) Copies of initiation notice were also sent to FICCI, CII, ASSOCHAM etc., for wider circulation.

## B. Product under Consideration.

2. The product under consideration in the present case is "Poly Vinyl Chloride Paste Resin" also called Emulsion PVC Resin and referred to as PVC Paste Resin in the present investigation (also referred to as the subject goods). The PVC Paste Resin is produced from Vinyl Chloride Monomer (VCM). VCM is produced using EDC, which in turn requires chlorine as one of the major products. The subject goods is produced and sold in the form of white/off-white powder. The properties of the product are described in terms of K value, inherent viscosity, particle size retention, heat loss, initial BFB etc. There are arguments from various interested parties with regard to various grades of the subject goods which differ in terms of K values and which may not be produced by the domestic industry or imported from subject countries. Further, it has been argued that the customs classification mentioned in the initiation notification was incorrect. The authority has examined the various arguments put forward by various interested parties in this regard and holds that there is no significant difference between various grades, as these are technically and commercially substitutable. All grades are, therefore, subject matter of present investigation and are within the scope of product under consideration. With regard to customs

classification mentioned in the initiation notification as also in the application filed by the domestic industry, it is noted that initiation notification has clearly mention that the only product description was dispositive and customs classification was only indicative and not binding on the scope of the product under consideration. It is further noted that the authority had informed all responding interested parties about the correct customs classification after the initiation and provided sufficient opportunity to these interested parties to provide information as was considered relevant as a result of this change. It is further noted that none of the interested parties has revised the data after this clarification. Common applications of PVC Paste Resin are artificial leather (Rexene, coated fabrics, tarpaulins, conveyer beltings, toys, automotive sealant, adhesives etc. The subject good is processed at consumer end, by mixing liquid plasticizers like DOP to form free flowing mixtures. These mixtures or pastes are formed to suitable shapes or coated on substrates like textiles. The subject good is classified under chapter 39 of the customs tariff head within the customs sub-heading 39042110.

#### C. Like Article.

3. The petitioner has claimed that goods produced by it are like articles to the goods originating in or exported from subject countries. There is no significant difference in the subject goods produced by the petitioner and those exported from subject countries. Petitioner claims that the two are technically and commercially substitutable. Rule 2(d) of the Anti-dumping Rule specifies that like articles mean an article, which is identical and alike in all respects to the product under investigation or in the absence of such an article, another article having characteristics closely resembling those of the articles under examination. In order to establish that subject goods produced by the domestic industry is a Like Article to that exported from subject countries, characteristics such as technical specifications, manufacturing process, functions and uses and tariff classification have been considered by the Authority. It has been argued by various interested parties that suspension PVC Resins and paste PVC resins are like products and hence they should be treated as like articles. It has also been argued that plasticized PVC Resins and non-plasticised PVC resin are similar products. The authority has examined the various arguments by various interested parties in this regard and holds that PVC Paste Resin and PVC suspension resin are two distinct and different products. It is further noted that the two resins differ in terms of production technology, manufacturing process, plant and equipment, physical characteristics, functions, major usages and classification in terms of Indian Trade Classification based on Harmonized System. The differences in terms of parameters cited above are critical to the two products. It is further noted that producers of suspension PVC cannot produce paste PVC in the plant meant for suspension PVC. It is also noted that the prices of the subject goods are

much higher than suspension PVC resin. With regard to the grouping of plasticised PVC and non-plasticized PVC, it is noted that the petitioner had not included plasticised PVC within the scope of the product under consideration. Further, few exporters have also argued in their submissions that Paste PVC and suspension PVC are different products altogether. As regards the submissions made by the user organisations about the inability of the domestic industry to manufacture all the grades, the Authority has carefully examined this contention after perusing the submissions made by various interested parties including the exporters and after onsite verification of the sales data of the only cooperating exporters from Korea RP that there is no significant differences within different grades of the PVC paste or emulsion resin manufactures by the various exporters in terms of their production facilities, physical and chemical characteristics and their usage. Further, no information along with any evidences have been presented to the Authority suggesting that domestic industry is not able to manufacture the particular grades and these grades are not substitutable amongst themselves. It is also noted that every manufacturer fine tunes its products to cover some narrow niche segments within a broad segment, but that does not render that product un substitutable amongst themselves. On basis of the detailed investigation, the Authority notes that PVC Paste Resin produced by domestic industry has characteristics, which are similar to those imported from subject countries and to those sold in the market of exporting countries. In view of the above the Authority holds that PVC Paste Resin produced by the domestic industry and those being imported from and sold in the subject countries are like articles within the meaning of the rules.

#### D. Domestic Industry

4. The petition has been filed by M/s. Chempalst Sanmar Limited, Chennai. As per PVC Resin Manufacturers Association (PREMA), there are only two major producers of the subject goods in India i.e. the petitioner and M/s. Finolex Industries Ltd. It is noted that the petitioner is a major producer of subject goods in India accounting for a major proportion of the production of the subject in India. The other producer of the subject goods i.e. M/s. Finolex Industries Ltd has supported the application filed by domestic industry. There are arguments from some of the interested parties that the petitioner does not have the standing to file the application as PVC suspension resin and PVC paste resin are like articles. The authority has examined the issue of like article in the preceding paragraph and after detailed examination, the authority holds that the petitioner constitutes the domestic industry within the meaning of rule 2(b) and the petitioner satisfies the criteria of standing to file the application in terms of rule 5(3)(a) of the anti dumping rules.

**E. De-minimus.**

5. As regards ascertaining that the imports from the subject countries during the period of investigation (POI) are above de-minimus levels, the Authority has referred to the transaction wise data from the subject countries as made available by DGCIS, and the actual exports data made available by the cooperating exporters. After examining the data, The Authority holds that imports from all the subject countries are above de-minimus levels in terms of volume of imports.

**F. Dumping.**

6. Under Section 9A(1) I of the Customs Tariff Act 1975, Normal value in relation to an article means:

1. The comparable price, in the ordinary course of trade, for the like article when meant for consumption in the exporting country or territory as determined in accordance with the rules made under sub-section (6); or
2. When there are no sales of the like article in the ordinary course of trade in the domestic market of the exporting country or territory, or when because of the particular market situation or low volume of the sales in the domestic market of the exporting country or territory, such sales do not permit a proper comparison, the normal value shall be either:-
  - a. Comparable representative price of the like article when exported from the exporting country or territory or an appropriate third country as determined in accordance with the rules made under sub-section (6); or
  - b. The cost of production of the said article in the country of origin along with reasonable addition for administrative, selling and general costs, and for profits, as determined in accordance with the rules made under sub-section (6);

Provided that in the case of import of the article from a country other than the country of origin and where the article has been merely transhipped through the country of export or such article is not produced in the country of export or there is no comparable price in the country of export, the normal value shall be determined with reference to its price in the country of origin.

7. The Authority sent questionnaires to all the known exporters for the purpose of determination of normal value in accordance with Section 9A(1)(c). Only two producers, namely, M/s. LG Chem Ltd and M/s. Hanwha Chemical Corporation, Seoul have responded to the questionnaire in the form and manner required as per letter to the exporters and exporter's questionnaire.

#### F.1 Korea RP

##### (a) Cooperation

8. M/s. LG Chem and M/s Hanwha Chemical Corporation, Korea RP has responded to the exporters' questionnaire by giving information with regard to various appendices mentioned in the exporters' questionnaire. They also offered verification of the data submitted by them and the Authority has verified the data after onsite inspection at the premises of both the producers and the exporters. The domestic industry has submitted after the disclosure statement that various parameters on the basis of which the price adjustments has been made by the Authority is not very clear from the disclosure statement. The Authority has examined the issues raised by the domestic industry and concludes that al the price adjustments claimed by the exporters were actually verified by the Authority in full before determining the dumping margin for the exporters from Korea RP.

##### (b) Normal Value & Export Price for LG Chem:

9. M/s. LG Chemical Ltd , Korea had one plant solely for the production of the subject goods at Yeusa in the Korea RP and their head office was at Seoul. The verification of the product under consideration and the production process was conducted at the plant in Yeusa and the verification of the data pertaining to the domestic sales transactions of the exporting firm as well as export sales to India were conducted at their corporate headquarters in Seoul. A number of invoices at random were selected by the Authority as listed in Appendix I. All these invoices were verified including all the details as specified in the Appendix I of the questionnaire response from these invoices. It was pointed out to the verification team with the evidence that LG Chem, broadly classifies its paste resin products into LP, MSP and its special

grades based on the product characteristics. LP grade is further subdivided into LP 170, LP 090, and LP 010Y. Similarly, MSP grade is further subdivided into PB 1752, 1202, PB 085 and PA 1302. After examining the product characteristics of all the different grades, it was held that the concerned products being sold in the domestic, export and third country markets are similar both in terms of physical and product characteristics..

10. The production processes of the exporter was also verified in order to reach conclusion as whether the technological improvements in the recent years has materially changed the technological nature of the product or has enabled the production of the subject goods at a consistent quality which is very much desired and necessary for the user industry. However after verifying the exporter's process, it was concluded that though the exporters have better automation systems than the domestic industry, the similarity of the end product of the product under consideration produced by the exporters and the like product produced by the domestic industry in its essential characteristics were never in doubt. Some of the invoices pertaining to exports to India (chosen randomly by the verification team) as listed in the Appendix II of the exporters' questionnaire were also verified. Further, all the adjustments pertaining to before FOB and after FOB prices were verified by the authority. After that the cost of production was determined from the books of accounts maintained by the exporters. From the accounts of the POI , the consistent methodology followed in the accounting of the cost of production was established. Further, the cost statements of plant, stock statements of the raw materials, bills for the different utilities during the POI were also verified. From the domestic sales data, the test of 80/20 were also verified to adjudge whether the domestic sales transactions made by the exporter were in the ordinary course of trade. After detailed examination, it was concluded that the domestic sales of the exporter were indeed in the ordinary course of trade and in sufficient quantity.
11. Further, the Authority also verified the adjustment factors in the export sales to India and also their sales in the domestic market. As regards adjustment factors in export sales to India, the authority verified from their records whether domestic freight charges as well as international freight charges actually incurred on the subject goods for exports to India are deducted from the export price. Similarly, commission for registered customs specialists are subtracted from export price. The Authority noted that the exporters get the duty drawback on exported goods, which are added to the export price to arrive at the net export price at the ex-factory value. Other adjustments as detailed in the response are also verified.

With regard to adjustments to the domestic sales, besides, the deduction of freight charges, packing expenses, commissions and credit expenses, the Authority found that among synthetic resin related products manufactured at home for the goods sold in the domestic market and not exported overseas, the company pays environmental charges for disposing wastes and for other social cause. This expenses is subtracted from the domestic selling prices to arrive at net domestic sale price at the ex-factory level. A list of signed invoices along with their packing lists, copies of their LCs, copies of their combined transport bill of lading, commission agreement, certificate of origin for exports to India, beneficiary certificates, copies of air bills for a list of serial numbers of invoices picked randomly by the Authority were examined and verified with the original records kept by the exporters for its authenticity.

- 12 The dumping margin calculation was revised after verifying the data from the exporters with regards to their normal value and export price at the ex factory level and after verifying all the adjustments. The calculations pertaining to the determination of normal value and export price are annexed at the Confidential Disclosure.

(c) Normal Value & Export Price for Hanwa Chemical Corporation, Seoul

13. The Authority also verified all the records pertaining to production and sales of the M/s Hanwha Chemical Corporation, Seoul. The only plant of M/s. Hanwha Chemicals Corporation is situated at Ulsan. Their plant was visited to examine the products and production process and all the costing and sales data were examined by the Authority at their corporate Headquarters at Seoul. Though most of the data pertaining to inland transportation contract are written in Korean language, the exporters made available an English translation of the important terms used in the contract. Similarly, the agents' commission was verified as per the actual records kept by the exporters and so was the packing expenses and inland transportation expenses incurred by the company. It was also examined that M/s. Hanwha Chemical Corporation (HCC) is producing 16 grades of PVC pastes/emulsion resins and each grade is identified with a separation identification code though the authority could not conclude on any scientific coding system behind it other than the normal nomenclature for further identification of different grades. However, among their different PVC paste grades, there is only one grade i.e. KL-31 which is exported to India. It was further noted that the subject goods sold in India and also in the

home market are comparable in physical and technical characteristics. While examining the information pertaining to domestic sales to India, it was found that certain information with respect to affiliation were not provided correctly to the Authority in their original response. However, the producer and exporter immediately supplied the required data with the mention of their affiliation with their suppliers or consumers. The authority, therefore, segregated all those transactions pertaining to affiliated parties and thereafter came out with their net domestic sales price at ex-factory value (normal value) after excluding all the adjustments as mentioned in the appendix 3B and 3A. Before working out the dumping margin for M/s. HCC, the 5% sufficiency tests and the ordinary course of trade test in terms of 80-20 was carried out by the Authority. Thus, for the exports to India the duty drawback element has been added upon and in appendix 3B, the environmental charge in terms of waste disposal fee have been debited in order to arrive at net sales price at the ex factory level for determination of Normal value. The dumping margin calculation was revised after verifying the data from the exporters with regards to their normal value and export price at the ex factory level and after verifying all the adjustments. The calculations pertaining to the determination of normal value and export price are annexed at the Confidential Disclosure.

(d) Comparison

14 For the purpose of a fair comparison between the normal value and export price at an ex factory level, due allowance in the form of adjustments was made for differences that were claimed and demonstrated to affect prices and price comparability. These adjustments were made, wherever appropriate, in respect of transport, insurance, handling, loading, credit costs and others in accordance with para 6 of the annexure I of the anti dumping rules made under the Customs Tariff Act.

(e) Dumping Margin for LG Chemical and Hanwa Chemical Corporation:

15. In accordance with Rule 6(IV) of annexure I to the anti dumping rules, the dumping margin was established on the basis of weighted average normal values with the weighted average export price. The comparison showed the no existence of dumping of the subject goods

by the exporters during the POI. The weighted average dumping margin, expressed, as a percentage to the export price has been determined and is negative for both the exporters.

### **F.2 Other exporters from Korea RP:**

16. As the volume of imports from Hanwha Chemical Corporation and LG Chemical Corporation was very high (In fact all the exports made from Korea RP were from these two exporters only during the POI) as compared to total volume of import from Korea as a whole, no residual dumping margin has been determined for the residual exporters.

### **F.3 European Union**

#### **(a) Cooperation:**

17. None of the companies from the European Union exporters and Producers have not submitted response in the form and manner as prescribed in the exporter's questionnaire. In fact, none of them have submitted any information with regards to the Appendix 1, which would show transactions wise sales information in the country of origin. Further, They have not submitted transaction wise information with regards to the exports of subject goods to India during the POI though some of the exporters have submitted some invoices pertaining to the shipments made to India alleging that their prices are not undercutting the domestic industry's sales and in fact they are above the sale price of the domestic producer. However, None of them have not submitted this information in the form and manner of the exporters questionnaire. Further, they have not submitted 2A which shows the sale of the subject goods of the company with separate data for exports to India, domestic market and exports to the other countries. Similarly, Appendix 3 has not been submitted which would show operating statistics of the firm. Further, they have not submitted any information with regards to the sales price structure for India and the EU, and they have not submitted any information evidencing the various adjustments claimed in their sales price structure. Further no information pertaining to the Appendix 4 and Appendix 5 has been submitted which would show installed capacity, production, sales and raw material consumption and reconciliation. Further statement of raw material consumption as required in Appendix 6 and allocation and apportionment of expenditure as required in the Appendix 7 has not been submitted. Additionally, no information with respect of statement of the cost of the production as

required in the Appendix 8, Factory cost and profit of exports to India and domestic sales as required in the Appendix 8A and 8B has not been provided without which the tests of ordinary course of trade for domestic sales for determination of Normal value is not possible. Further, statement of the allocation of the SGA overheads has not been provided as required in the Appendix 9. In fact the entire submission made by the exporter to the exporter's questionnaire is grossly deficient. The authority notes that the company was reminded by the authority to submit the complete response in the form and manner as prescribed in the exporter's questionnaire along with its Non confidential summary and was also reminded of the fact that if the information was not supplied within reasonable time, the Authority would be free to make determinations on the basis of the facts available including those contained in the application for the initiation of the investigation by the domestic industry. The Authority notes that none of the exporters and producers have submitted any reply to the Authority letter asking for appendix wise information in the form and manner required in the exporters questionnaire. In view of non-submission of response to the exporter's questionnaire, the Authority treats the producers and exporters as Non-cooperative within the meaning of Agreement of Anti Dumping and Anti dumping rules.

(b) Normal Value and Export Price:

18. The authority notes that the exporter has not submitted information in the form and manner required under the exporter's questionnaire. As no relevant information had been submitted under various appendices (particularly I & VIII), the authority cannot determine whether the domestic sales have been made in the ordinary course of trade. The claim made by the petitioner with regard to determination of normal value has also not been disputed by the exporter or other interested parties. Under the circumstances, normal value under the rules is determined on the basis of facts available as per rule 6(8) of the Anti-dumping Rules. Therefore, the information available on the estimated costs of the production in the country or origin plus selling, administrative and general expenses and a reasonable amount of profit after making reasonable adjustments has been taken as the basis for working out the normal value of the subject goods for the exporter. Export price at ex factory level has been determined with the available data from IBIS (International Business information systems, Mumbai) and with adjustments as per the facts available.

(c) Comparison:

19. For the purpose of a fair comparison between the normal value and export price at an ex factory level, due allowance wherever appropriate, has been allowed in respect of transport, insurance, handling and other costs.

(d) Dumping Margin:

20. In accordance with Rule 6(IV) of annexure I to the anti dumping rules, the dumping margin was established on the basis of constructed normal values with the weighted average export price at an ex factory level. The comparison showed the existence of dumping of the subject goods by the exporter during the POI. The weighted average dumping margin, expressed, as a percentage to the export price has been determined and is 20.32%

**F.5 Saudi Arabia**(a) Cooperation:

21. The only producer and exporter from Saudi Arabia M/s SABIC have not submitted any response in the form and manner required as per the exporters' questionnaire. However, M/s SABIC has submitted some arguments to the initiation notification and has also submitted some data regarding their sales made to India including the names of the importers though the information submitted by them is clearly deficient and in fact the producer has not submitted any appendix wise information at all indicating inter alia the transaction wise information in the domestic market, factory cost and cost of the production of the subject goods during the POI for India and other countries , sales price structure for India and domestic sales. M/s SABIC has submitted some invoices pertaining to their sales to India during the POI alleging that their prices are not undercutting the domestic industry's sales and in fact they are above the sale price of the domestic producer. However, since the exporter has not submitted information in the form and manner as per the exporter's questionnaire, they have been treated as non cooperative in this investigation.

(b) Normal Value and Export Price:

22. The authority notes that the exporter has not submitted any information in the form and manner required under the exporter's questionnaire. As no relevant information had been submitted under various appendices (particularly I & VIII), the authority cannot determine whether the domestic sales have been made in the ordinary course of trade. The claim made by the petitioner with regard to determination of normal value has also not been disputed by the exporter or other interested parties. Under the circumstances, normal value under the rules is determined on the basis of facts available as per rule 6(8) of the Anti-dumping Rules. Therefore, the information available on the estimated costs of the production in the country of origin plus selling, administrative and general expenses and a reasonable amount of profit

after making reasonable adjustments has been taken as the basis for working out the normal values of the subject goods for the exporter from Saudi Arabia. Export price at ex factory level has been determined taking into account the weighted average export price as reported by the exporter in their submission with suitable adjustments.

Comparison:

23 For the purpose of a fair comparison between the normal value and export price at an ex factory level, due allowance wherever appropriate, has been allowed in respect of transport, insurance, handling and other costs.

Dumping Margin:

24. In accordance with Rule 6(iv) of annexure I to the anti dumping rules, the dumping margin for exporters of Saudi Arabia were established on the basis of constructed normal values with the weighted average export price at an ex factory level. The comparison showed the existence of dumping of the subject goods by the exporters from Saudi Arabia. The weighted average dumping margin, expressed, as a percentage to the export price has been determined and is 5.26%, As there was no cooperation from any of the exporters from Saudi Arabia, the dumping margin has been set by the authority for the Saudi Arabia, as a whole.

Country	Name of the Producer/exporter	Normal value	Export Price	D.M%
Korea RP	M/s Hanwa Chemical Corporation, Seoul,	****	****	-1.69
	LG Chemical , Seoul	****	****	.98
EU	All Producers/exporters	****	****	20.32
Saudi Arabia	All Producers/Exporters	****	****	5.26

## G. Injury

### a) Domestic consumption/demand

25. For the calculation of the Domestic consumption/demand of the product under consideration in a domestic market, the authority added the sales volume of the domestic industry to the total imports into the domestic market. On this basis, the domestic demand or consumption of the subject goods in the domestic market increased from 32274 MTs in 2000-01 to 40693 MTs representing an increase of 26%.

Domestic Consumption or Demand				
	2000-01	2001-02	2002-03	POI Ann Ann
Demand	****	****	****	****
Index	100.00	127.42	119.45	126.09

26. (a) Cumulative Assessment of the effects of imports concerned

- (i) The Authority examined whether imports of subject goods originating in Saudi Arabia, EU and Korea should be assessed cumulatively as per Article 3.3 of the Agreement on Anti-Dumping and Rule 11 of the Anti Dumping Rules Under the Customs Tariff Act.
- (ii) The margin of dumping established in relation to the imports from each of the subject countries except both the exports from Korea RP was above the de minimus threshold as defined in Article 5.8 of the Agreement on Anti-Dumping and Rule 14 of the Anti Dumping Rules and Volume of dumped imports from each of these countries except Korea RP was not negligible.
- (iii) The domestic product and product supplied by producers in various countries are like articles; and the imported products and domestically produced subject goods can and are being interchangeably used. Response filed by the various interested parties and correlation of the same with customer wise sales of the domestic industry makes it evident that there are a number of parties who have resorted to purchase from the domestic industry and imports from subject countries. It is further noted that subject goods supplied by various countries compete in the same market. Further, it is also noted that products

supplied by various producers in subject countries are being marketed in India during the same periods through comparable sales channels and under similar commercial conditions. Price undercutting is positive in respect of EU.

(iv) In the light of the above, the authority has considered that the criteria set out in article 3.3 of the Agreement of Anti-Dumping and as per para iii of the Annexure II under Rule 11 were met with respect to imports from EU and Saudi Arabia and therefore Imports from these two countries should be cumulated for the purpose of injury determinations. No injury determinations are proposed for imports coming from Korea RP as dumping margin is negative from imports from that country.

b) Imports originating in the subject countries.

Volume

27. The volume of dumped imports of the product under consideration from subject countries into the domestic market increased by 222% over the period under consideration. The authority further notes that the domestic consumption increased by 26% during the period under consideration.

	Share of Dumped Imports in total demand			
	2000-01	2001-02	2002-03	POI Ann
Domestic Industry	****	****	****	****
Other Producers	****	****	****	****
Dumped Imports	2846	3272	5465	6329
Other Imports	2243	2950	1460	1966
Total Market	****	****	****	****
<u>Changes in Mkt Share</u>				
Total Market	****	****	****	****
Changes in Total Mkt From Base Year		27.42	19.45	26.09
Dumped imports**	2846	3272	5465	6329
Changes in Dump Imp		14.96	92.03	122.39
Other Imports	2243	2950	1460	1966
Changes in Other Imp		31.52	-34.92	-12.33

<u>% Share held by</u>				
Dumped goods	8.82	7.96	14.18	15.55
Other Imports	6.95	7.17	3.79	4.83

\*\*Dumped imports means imports from EU and Saudi Arabia only in the rest of the findings.

(c) Share of subject countries in total imports

28. Over the period under consideration, the share of the domestic market held by dumped imports from the subject countries increased by 36% percentage points. The market share held by the dumped imports increased from 55% in 2000-01 to 76.3% in the total imports during the POI.

Share of Imports from subject countries in Total imports				
Actual data	2000-01	2001-02	2002-03	POI Ann.
European Union	*****	*****	*****	*****
Market Share	29.86	20.44	49.63	54.66
Saudi Arabia	*****	*****	*****	*****
Market Share	26.07	32.15	29.30	21.63
Total dumped Imports	*****	*****	*****	*****
Total market share of dumped imports	55.93	52.59	78.92	76.30
Other Countries except Korea	*****	*****	*****	*****
Other market share	44.07	47.41	21.08	23.70
Total Imports	5089	6222	6925	8296

Market Share of imports from subject countries as a proportion to the Domestic production				
	2000-01	2001-02	2002-03	POI Ann.
Subject countries/territory(Excluding Korea RP)	14.83	12.63	22.19	24.92

Market Share of imports from subject countries as a proportion to the Domestic Demand				
	2000-01	2001-02	2002-03	POI Ann.
Subject countries(dumped)	8.8	8.0	14.2	15.6

29. On the basis of above examination, the Authority concludes that there has been a significant rise in the market share of dumped imports of the subject countries as a share of total demand and it has increased significantly during the POI as compared to previous years. The Authority after examining the evidence concludes that the domestic industry is facing volume effect on account of increased imports of subject goods from the subject countries.

(d) Prices

Evolution of Price over the period under consideration

30. Between 2001-02 and the POI, the average CIF prices of the imports originated in subject countries decreased significantly by 8.4% percentage points during the period under consideration. The decrease occurred steadily over the period under consideration.

Average price of dumped imports				
	2000-01	2001-02	2002-03	POI Ann
CIF Price of Dumped Rs/MT	*****	*****	*****	*****

Average price of dumped imports				
	2000-01	2001-02	2002-03	POI Ann
Indexed (Import Price) CIF	100.0	93.1	93.6	91.6

(e) Price Undercutting

31. A comparison for comparable types of the product concerned was made between the exporting producers and the domestic

industries average selling price in the domestic market, net of all rebates and taxes to unrelated customers, at the same level of trade. The prices of the domestic industry were determined at the ex factory level excluding the basic customs duty. The constructed CIF prices of the subject countries concerned were adjusted for post importation applicable duties (basic customs duty). This comparison showed that during the period of investigation, the subject goods originating in the subject countries were sold in the domestic market at prices which undercut the domestic industry's prices when expressed as a percentage of the domestic selling prices of the domestic industry.

Price Undercutting from Subject and other countries				
Indexed data				
	2000-01	2001-02	2002-03	POI Ann
Landed Price EU	****	****	****	****
Selling price	****	****	****	****
PUC from EU %	(1-5)	(4-8)	(4-10)	3-8
Landed Price - Saudi	****	****	****	****
Selling price	****	****	****	****
PUC from Saudi Arabia %	5-10	(1-3)	4-8	(3-6)

#### (f) Price Underselling

32 The Authority has also examined the claim of the petitioner that the domestic industry is suffering on account of the losses from the sale of PVC Paste Resin. The Authority notes that price underselling is an important indicator to make an assessment of the injury. The Authority has worked out the Non-injurious price for the product under consideration and compared the same with the landed value to arrive at the extent of price underselling. The analysis shows a significant level of incidence of price underselling causing injury to the domestic industry from the dumped imports from EU. Additionally, the imports were having significant depressing effect on the prices in the domestic market, as the domestic industry prices have shown significant decline in their selling prices during the period of injury examination as a whole. Due to the depressing effect on the prices of the domestic industry, the margin of price undercutting does not appear significant and imports from some of the subject countries show negative price undercutting as well. However the Authority notes that this could be on account of the price depression of the domestic industry. The authority has determined the extent of price undercutting during the POI and concludes that the domestic industry has suffered price undercutting from dumped imports from the subject countries and significant price underselling from EU during the POI.

**(g) Price Depression**

33. As noted in the preceding paragraph, selling prices of the domestic industry have declined during the POI as compared to 2000-01. The Authority on the basis of the examination concludes that the domestic industry is facing the price depression on account of the dumped imports from subject countries. The authority also notes that variable costs form an overwhelming part in the total costs of production of the subject goods and during the period under consideration, though the cost of production has declined by 5% from 2000-01 to POI. The selling prices of the domestic industries have declined by more than 11%. The authority notes that even after increasing sales volume in absolute terms, the domestic industry's selling prices have been depressed and domestic industry is having to sell the subject goods at a price much less than non-injurious price. On the basis of the examination, the authority concludes that the domestic industry has suffered injury by price depression also.

**(h) Situation of the Domestic Industry**

**Preliminary remarks**

34. For the examination of the impact of the imports on the domestic industry in India, the Authority considered such indices having a bearing on the state of the industry as production, capacity utilisation, sales quantum, stock, profitability, net sales realisation, the magnitude and margin of dumping, etc. in accordance with Annexure II (iv) of the Rules supra

**Capacity, Production and Capacity Utilisation**

Production capacity and utilisation (Actual)				
	2000-01	2001-02	2002-03	POI Ann.
Capacity	18000	25560	34080	34080
Production	19005	25807	27796	25029
Capacity Utilization%	105.58	100.97	81.56	73.44

35 Production of the domestic industry increased up to Sept., 02 followed by the decline thereafter. While increase in production up to Sept., 02 was due to increase in the capacities and sales, the decline in the production in Oct., 02 – June, 03 was on account of the adverse performance of the product – both in terms of sales volume and selling prices. It is further noted that the production of the domestic industry should have increased further in the investigation period, given addition to the capacities by the petitioner. However, it is noted that production of the domestic declined rather than increased.

#### Utilization of capacity: -

36. Capacity utilization of the domestic industry has continuously declined throughout the injury period, as may be seen from the table below:-

Year	Unit	2000-01	2001-02	2002-03	Oct-02-June02	Annualized
Capacity	Mt	18000	25560	34080	25650	34080
Capacity Utilization	%	105.08	100.97	78.22	73.44	73.44

It is found that the domestic industry augmented capacity and invested about Rs. 18.7 Crores in two phases, in anticipation of higher demand. The capacity was first enhanced in 2001-02 (by 7560 MT) and in the very same year, the domestic industry achieved capacity utilization level of about 100%. The domestic industry further enhanced capacity (by 8520 MT) in 2002-03. Even though the production increased marginally in April-Sept., 2002 period, the same had to curtail in the investigation period in view of significant adverse sales performance in terms of volume and price.



37. In order to examine whether excess capacity added by the domestic industry has added to the injury to the domestic industry, the Designated Authority examined the demand of the product, existing and anticipated and compared the same with the capacities created by the domestic industry. It was found that the capacity additions by the company were not disproportionate to existing and anticipated increase in demand, as would be seen from table below.

Year	Unit	2000-01	2001-02	2002-03	Oct-02-June02	POI Annualized
Capacity – Chemplast and Finolex- Total Capacity	Index	100	127	157	118	157
Demand as a percentage of Capacity	%	115	115	87	92	92

The anticipated demand of the product, as assessed by the domestic industry was 48000 MT at the time of expansion of the project as per internal project and market study conducted by the company.

#### Inventories

38. It is noted that the petitioner was maintaining very low level of inventories till 2001-02. This was in spite of significant increase in production consequent upon increase in capacity. However, decline in sales volumes in the investigation period, in spite of curtailment of production and lowering of selling prices, resulted in increase in inventories. Moreover, Inventory as a percentage to the sales volume increased from 1.40% to 6.02% during the period under consideration.

Actual and Potential Negative Effects on Inventories				
	2000-01	2001-02	2002-03	POI Ann.
Inventories/Stocks	****	****	****	****
Sales Volume MT	****	****	****	****
Invent % to Sales Vo	1.40	0.50	3.55	6.02
Indexed Stocks	100.00	48.24	324.49	567.35

### Cash Flow

39. The domestic industry is a multi product company, with subject goods constituting about 21% of their total business. Impact of dumping on the cash flow situation of the petitioner was therefore not directly visible in the cash flow situation of the company contrary to the claims made by the domestic industry.. Nevertheless, the cash flow situation of the company was analyzed by the Designated Authority and it was found that Cash flow from operations of the company as a whole shows significant positive trend, whereas cash profits of the subject goods, which was doing better earlier, deteriorated in the period of investigation. However, as mentioned earlier, based on the evidence made available, the authority could not conclude injury on account of this parameter despite the claims made by the domestic industry that it has incurred adverse cash flow during the POI for the subject goods.

### Sales Volume and Market Share of the Domestic Industry

40. The sales by the domestic industry in the domestic market increased by 32% in terms of volume. However, in terms of value, the per unit realization had a significant decline.

41. The market share held by the domestic industry, however, increased a little over 2% over the period under consideration. However, the market share of the other producers declined from 24.8% to 17.2% during the period under consideration. It is further noted that share of dumped imports in the total imports increased from 8.82% to 15.5% during the period under consideration while the non dumped imports declined from 6.95% to 4.83%.

Year	2000-01	2001-02	2002-03	POI Annualized
Sales of the domestic industry	****	****	****	****
Trend	100	135.01	138.92	132.38

It is seen that the sales volumes increased significantly between 2000-01 and 2001-02. However, thereafter, sales volumes have shown declining trend. Even though sales shows increasing trend on overall basis, it is found that the sales volumes of the domestic industry were sub-optimal, given the additions to the capacity and increase in consumption, as can be seen from the table below. It is evident from the above that the sales of the domestic industry did not increase consequent to addition of capacity and in spite of available demand in the Country.

	Market Share of Domestic Industry in demand			
	2000-01	2001-02	2002-03	POI Ann
<u>% Share held by</u>				
Domestic Industry	59.44	62.99	63.88	62.41
Indian Industry	84.23	84.87	82.04	79.61
Other Producers	24.8	21.9	18.2	17.2
Dumped goods	8.82	7.96	14.18	15.55
Other Imports	6.95	7.17	3.79	4.83

#### 42. Growth: -

Demand for subject goods has shown significant increase during the period under consideration. This fact appears to have been anticipated by the domestic industry (as indicated in their feasibility report), resulting in enhancement of capacities. While the domestic industry posted positive and healthy growth in the beginning, the growth of the domestic industry was retarded in the investigation period and the domestic industry in fact recorded negative growth when the market was growing, as may be seen from the table below.

Year	Unit	2000-01	2001-02	2002-03	Oct-02-June02	POI Annualized
Growth in demand	%	-	5.49	17.18	17.64	17.64
Growth in sales from base year	%	-	35.01	38.92	32.38	32.38
Growth in Turnover from base year	%	-	20.71	25.79	15.61	15.61

Growth profit from base year	in %	-	44.86	-30.90	-26.61	-26.61
------------------------------	------	---	-------	--------	--------	--------

Sales Prices

43. The Domestic producer's average net sales price of the subject goods produced and sold in the domestic market decreased by 12% between 2000-01 and POI.

44. The sales price reduced by 10% during the 2000-01 to 2001-02 and increased by 3.4% from 2001-02 to 2002-03 but again dropped sharply during the POI.

Average price of dumped imports (Combined only if Cumulated) CIF and Cost of the Production of the Domestic Industry				
	2000-01	2001-02	2002-03	POI Ann
CIF Price of Dumped Rs/MT	****	****	****	****
Cost of Prod (DI)	****	****	****	****
Domestic Prices	****	***	****	****

Average price of dumped imports and Cost of the Production of the Domestic Industry				
	2000-01	2001-02	2002-03	POI Ann
Indexed (Import Price)	100.0	93.1	93.6	91.6
Indexed (COP-DI)	100.0	86.4	90.3	105.4
Domestic Prices	100.0	89.4	93.8	87.3

45. The evolution of sales price should be seen in comparison with the evolution of unit cost of production. Between 2000-01 and 2001-02, the unit cost of production of the domestic industry decreased by 13%. However, from 2001-02 to POI it increased by 22% mainly because of increase in the cost of the inputs/raw materials. It is therefore noted that during the period under consideration, while the unit cost of the production of the subject goods increased by 5%, its sale price declined by more than 12%. The Authority further notes that the firm has taken concrete steps towards cost reduction by slashing the employment. However, dumped imports exerted a pressure on the domestic industry to bring down the prices even after unit cost of production had gone up during the period under consideration.

### Employment

46. Even though the petitioner claimed that its employment level declined as a result of dumping, the Authority considers that the petitioner is a multi product company and therefore, employment levels of the company per se may not be a conclusive indicator of injury to the domestic industry.

Actual and Potential Negative Effects on Employment and Wages				
	2000-01	2001-02	2002-03	POI Ann.
No of Employees	****	****	****	****
% Change		-3.78	-7.55	-7.55
Volume of sales/Emp	29.0	40.7	40.2	41.5

Return on Investment & Cash profit				
	2000-01	2001-02	2002-03	POI Ann.
% return	4-10	6-12	5-8	-1-5
Increase y/y %		2.70	-1.81	-7.65
Index	100.00	147.34	115.67	-18.28
Cash profit Actual	****	****	****	****
Increase y/y %		****	****	****
Index	100.00	141.69	162.06	5.48

Capital employed				
	2000-01	2001-02	2002-03	POI Ann.
In Rs Lakhs	****	****	****	****
Indexed	100.00	98.88	144.84	144.84

### Productivity

47. Between 2000-01 and POI, productivity measured as output per person employed per year increased by 25% during the period under consideration. The increase in the productivity could be seen in the backdrop of decline in the number of employees of the domestic industry.

Productivity				
	2000-01	2001-02	2002-03	POI Ann.
Turnover Lakhs	****	****	****	****
Employees	****	****	****	****
Productivity %	****	****	****	****
Index	100	125.45	130.22	125.05

Wages

48. Salary & wages paid by the domestic industry shows 20% increase in about 3 years period, resulting in annual wage increase of about 6.33%. It does not appear that such a wage increase was abnormal. In any event, wage per kg. of production declined, as may be seen from the table below.

Year	Unit	2000-01	2001-02	2002-03	POI	POI Annualized
Wages Total	Rs/Lac	****	****	****	****	****
Wages /employee	Rs/Lac	****	****	****	****	****
Index		100	115.1	119.8	89.6	119.8
Wages per unit of production	Rs per kg.	****	****	****	****	****
Index		100	81.6	78.9	84.0	84.0

Factors affecting domestic prices

49. The imports from EU are resulting in significant price undercutting in the Indian market. In case of the subject countries, the landed price of imports is below the non injurious price of the domestic industry. Selling prices of the

domestic industry have declined as may be seen from the table below.

Year	2000-01	2001-02	2002-03	Oct-02-June02	Annualized
Net sales Realization	****	****	****	****	****
Trend	100.00	89.41	90.55	87.33	87.33

The above decline in selling prices is in spite of increase in cost of production, as may be seen from the table above. The imports were suppressing the prices in the market.

#### Profitability

50. Over the period under consideration, profitability of sales in the domestic market to unrelated customers in terms of profit/loss before tax on net sales declined significantly as tabled below.

Year	2000-01	2001-02	2002-03	POI	POI annu.
Profit/loss per unit (Rs./mt)	****	****	****	****	****
index	100	107.29	49.74	-20.10	-20.10
Profit/loss per unit (Rs./mt) before interest	****	****	****	****	****
Index	100	97.6	55.2	9.7	9.7
Total Profit/loss Before interest (Rs. lacs)	****	****	****	****	****
Index	100	131.8	76.7	9.6	12.8
Net profit/loss (Rs. Lacs) after interest	****	****	****	****	****
Index	100	144.86	69.10	-19.96	-26.61

It is further noted that the profits of the domestic industry have been severely eroded during the injury period as depicted above. The Domestic Industry which was making profits earlier is now suffering financial losses.

#### **Return on investments: -**

51. Return on investments have very significantly declined after increasing between 2000-01 and 2001-02, as can be seen from the table below: -

Return on Investment & Cash Flow				
	2000-01	2001-02	2002-03	POI Ann.
% return	****	****	****	****
Index	100.00	147.34	115.67	-18.28
Cash profit Actual	****	****	****	****
Index	100.00	141.69	162.06	5.48

Capital employed				
	2000-01	2001-02	2002-03	POI Ann
In Rs Lakhs	****	****	****	****
Indexed	100.00	94.70	159.93	158.07

Year	Unit	2000-01	2001-02	2002-03	POI
Working Capital	Rs. Lacs	****	****	****	****
Index		100	85.59	78.96	78.96
Return on capital employed	Rs. Lacs	****	****	****	****
Index		100	139.14	48.01	8.11

It is seen that the domestic industry is finding itself to a situation of losses from a situation of profit, resulting in negative return on investment in the investigation period as compared to a situation of reasonable return on investment earlier years.

#### Ability to raise capital

52. . The Petitioner is a multi product company. Moreover, the petitioner has enhanced recently its capacity for production and sales of the subject goods. The Authority does not consider that ability to raise capital investment appears to have got impacted as a result of dumping. However, it is generally recognised that consistent adverse performance of the domestic industry would result in ability of the domestic industry to raise funds getting adversely affected.

Magnitude of dumping margin

53. The magnitude of dumping margin from each of the subject countries is significant as worked out in earlier paragraphs except Korea RP.

Evidence of Lost Contracts

54. The authority could not find any direct evidence with regard to injury on account of loss of contracts. Hence, the authority could not conclude any findings with regard with injury to the domestic industry on account of this parameter.

Quarterly comparison of performance

55. In addition to the examination of the domestic industry over the entire injury period on year by year basis, it was considered appropriate to examine performance of the domestic industry on quarterly basis between Apr.-June, 2002 to April-June, 2003. This was done in view of steep increase in imports on quarter to quarter basis and consequent adverse impact on the domestic industry. It was found that performance of the domestic industry deteriorated very steeply on quarter by quarter basis. While volume parameters improved till quarter ending Dec., 2002 and declined thereafter, price parameters deteriorated continually throughout these quarters, as may be seen from the table below.

Parameter	April 02-June 02	July 02-Sep 02	Oct 02-Dec 02	Jan 03-Mar 03	April - 03 - June 03
Production MT	****	****	****	****	****
Trend	100.0	108.3	111.0	80.2	90.2
Capacity Utilization %	78.30	90.69	86.90	62.81	70.59
Trend/Index	100	115	111	80	90
Sales MT	****	****	****	****	****
Trend/Index	100.0	120.8	129.8	127.3	84.5
Unit cost of Production Rs./MT	****	****	****	****	****
Trend/Index	100.0	113.0	121.6	125.9	127.3
Unit selling price Rs./MT	****	****	43500	45224	43434
Index/Index	100	99.4	91.5	95.1	91.3
Unit Profit/loss Rs./MT	****	****	****	****	****
Index/Index	100	54.0	-8.9	-7.4	-28.5
Total profit/loss Rs. lacs	****	****	****	****	****
Trend/Index	100	65.2	-11.6	-9.4	-24.1

### Conclusion on Injury

56. From the foregoing, The Authority concludes that Imports of the subject goods from the subject countries have increased significantly in absolute terms, also in relation to the total imports of PVC Paste Resin in India and also in relation to the demand of PVC Paste Resin in India and in relation to domestic production as well. It is also determined that imports from European Union are undercutting the selling prices of the domestic industry. The petitioner is suffering from price underselling from imports from European Union also as landed price of subject goods are below the Non Injurious price or fair selling price of the domestic industry. The petitioner is further suffering from price depression as landed price of the subject goods from subject country have exercised a downward pressure in the domestic selling price of the domestic industry. There is a decline in the selling price of domestic industry over period under consideration. The domestic industry has suffered losses on account of sales on subject goods. In fact, they have incurred losses during the POI. In fact, the performance of the domestic industry materially deteriorated over the injury period. Significant deterioration in profits (from significant profit to financial losses), cash profits (decline of 95%), return on capital employed (from 100 to 5 on the index basis), selling prices (from 100 to 87.3 on index basis), increase in stocks (from 1.4% of sales to 6.02% of sales), decline in capacity utilization show that the domestic industry has suffered material injury during the period of investigation. Even though the sales volume as well as the production increased during the period under consideration along with the increase in the productivity, the domestic industry suffered material injury, as the financial performance of the domestic industry deteriorated whereas these factors should have helped in the increase in profitability of domestic industry. Even though the wages of the domestic industry increased, the same could not have contributed to injury to the domestic industry, as the incidence of wage per unit of production declined. Though the domestic industry has not suffered any decline in the production, their capacity utilisation and their inventory sales turnover ratio has declined during the period under consideration. Though, the market share of the domestic industry has increased a little in relation to the total demand and their sales volume has increased during the period under consideration, their sales prices have declined all along during the period under consideration and the decline in the sales prices has been very significant considering the fact that unit cost of the production of the subject goods has increased during the period under consideration. It is also determined that their employment has declined and so have their wages during the period under consideration. However, the firm continues to make losses on account of the sales of the subject goods even after recording

the improvements in their productivity due to aforementioned reasons. On the basis of the foregoing, the Authority observed that the domestic industry has suffered volume as well as price injury. On the whole, the domestic industry has suffered material injury on account of dumped imports from subject countries.

Causal Link.

(a) Introduction

57. In order to reach its conclusions on the cause of the injury suffered by the domestic industry and in accordance with Article 3.5 of Agreement of Anti Dumping and as per para (v) of Annexure II under Rule 11under Customs Tariff Act as amended, the Authority examined the impact of all known factors and their consequences on the situation in that industry. Known factors other than the dumped imports, which could at the same time have injured the domestic industry , were also examined to ensure that the possible injury caused by these other factors was not attributed to the dumped imports.

(b) Effect of dumped imports

58. Between 2000-01 and the POI, dumped imports from the subject countries increased significantly in volume by 222% and in market share by 76% (from 8.8% in 2000-01 to 15.6% in the POI). As regards the export prices, they decreased substantially during the whole period under consideration and undercut domestic industry prices during the POI on average by 1-3%. Moreover, undercutting figures did not show the full impact of the dumped imports, since domestic industry prices were depressed. All this coincided with the deterioration of the situation of the domestic industry in terms of price reductions and deteriorating profitability.

59. Prices of dumped imports were below those of the domestic industry throughout the period under consideration and exerted a pressure on them which forced the domestic industry to decrease prices in spite of increasing costs of production. It is, therefore, considered that the dumped imports caused material injury to the domestic industry.

(c) Effect of Other factors

(a) Performance of Other Domestic producers:

60. There was another domestic producer of the subject goods apart from the petitioner during the period under consideration i.e. M/s Finolex Industries Ltd, Pune. It has been argued that only M/s Chemplast has made complaint about dumped imports and other domestic producer M/s Finolex has not suffered any injury. It has also been argued that M/s Finolex Industries Ltd is a single product company unlike the petitioner and the injury analysis of the other producer should be done by the Authority before drawing any final conclusions about the material injury to the domestic industry. Accordingly, M/s Finolex was directed to provide information relevant to injury determination. Information provided by was verified by the Authority. It was noted that M/s Finolex Industries Ltd is a multi product company with the subject goods comprising a very small proportion of the total turnover. Even though the information provided by Finolex is not complete in respect of all injury parameters, the company nevertheless provided information with regard to a number of injury parameters, analysis of which shows as under:-

Year	2000-01	2001-02	2002-03
		only eight months workings	
Capacity	10000	6667	10000
Production	****	****	****
Index	100	68.5	67.0
Capacity utilization	****	****	****
Index	100	102.5	67.5
Domestic Sales	****	****	****
Index	100	53.71	63.81

Profit/loss		****	****
Index		100	-3.42

It is seen from the above that performance of Finolex has also got materially deteriorated. In fact, Finolex has lost sales volumes, and has been prevented from increasing its production and capacity utilization and has in fact reported decline in production and capacity utilization. In respect of price effect, it is found that Finolex also has suffered financial losses. In fact, financial losses suffered by the company are higher than the financial losses suffered by Chemplast. Therefore, the performance of other domestic producers could not have any bearing on the performance of the domestic industry producing the subject goods.

(b) Self Inflicted Injury, Economies of Scale & Cost Efficiency:

61. It has been argued it is the cost structure, purchase policy, contract terms and policy of the petitioner to use its production of other items, therefore, restricting their loading of PVC Paste Resin assets which has primarily led to alleged injury, if any. The Authority notes that it has arrived at the cost of production of the subject goods and its Non-injurious price by taking into account actual cost of production of subject goods by verifying the domestic industries data without loading any overheads pertaining to the other business of the company.

(d) Contraction of demand or Changes in the pattern of consumption

62. The Authority notes that there is no contraction in the overall demand during the period under consideration. On the contrary, the overall demand has increased by 26% from 2000-01 to POI. The Authority also, therefore, concludes that there is no apparent change in the pattern of consumption.

(e) Volume and Prices of imports not sold at the dumped prices

63. Analysis of non-subject imports reveals such imports have remained at very low level. Moreover, the import prices from some of these sources were very high in the investigation period.

Import prices from Malaysia, Japan and Thailand were lower and comparable to subject countries imports. However, these countries individually commanded less than 3% of import volumes and collectively commanded less than 7% of import volumes. The petitioner had provided detailed information with regard to imports from various sources and there has not been any allegation of low priced imports from non-subject sources during the course of the investigations. In fact, the share of the Non dumped imports from all countries other than subject countries declined in the total demand and also in the share of the total imports. In view of the foregoing, it is noted that imports from non subject countries are considered not to have had any impact on the domestic industry.

(f) Trade Restrictive practices of and competition between foreign and domestic producers

64. The Authority notes that there is a single market for the subject goods where dumped imports from the subject countries compete directly with the subject goods produced by the domestic industry. On the basis of the examination of the transaction wise imports from the subject countries and from the data furnished by the cooperating exporter from subject countries, it appears that the price determines the choice of the supplier as dumped subject goods are like product to the indigenous producer. There is no allegation of trade restrictive practices. No allegations such as possible case or complaint under MRTP, etc. has come to the notice of the Designated Authority. There are only two producers in India and as stated earlier, both have suffered as a result of dumped imports. It would appear that the selling price of Chemplast is higher than that of Finolex. However, that does not establish that Chemplast has suffered injury as a result of lower prices of Finolex. In fact, Finolex has lost sales and production volumes in spite of prices lower than Chemplast. It is further noted that the imported product is sold to meet the similar commercial grades and specification as domestically produced subject goods. It is also noted that the imported subject goods and domestically produced goods are like articles and are used for similar applications/end uses.

(g) Developments in Technology, Export performance and productivity of the Domestic Industry

65. There has been no argument from any of the interested parties with regards to the fact that possible developments in technology could have been a possible cause of material injury being caused to the

domestic industry. On the basis of the examination of the records of the petitioner, the authority holds that developments in technology have not been a relevant factor for the injury to the domestic industry.

66. Domestic industry is not having exports of the product. Possible deterioration in the export performance is not a possible cause for injury to the domestic industry. Hence, the authority holds that material injury suffered by the domestic industry may not as a result of the export performance of the domestic industry.

67. As regards improvement in productivity, the authority notes that during the period under consideration, the productivity measures as output per person employed per year increased significantly during the period under consideration. Thus, possible deterioration in productivity is not a cause for injury to the domestic industry. It is further noted that the increase in productivity may be seen in the backdrop of decline in the number of employees of the domestic industry and also in view of the various cost cutting measures implemented by the domestic industry. On the basis of the examination, the authority holds that the firm has taken steps for better productivity and the productivity per se is not the cause for the injury to the domestic industry.

(h) Conclusion on causation

68. Given the above analysis which has properly distinguished and separated the effects of all known factors on the situation of the domestic industry from the injurious effects of the dumped imports, it is concluded that these other factors as such did not reverse the fact that the material injury found may be attributed to the dumped imports.

69. It is, therefore, concluded that the dumped imports originating in the subject countries have caused material injury to the domestic industry within the meaning of Rule 11 of Anti Dumping rules and article 3.5 of the Agreement of Anti Dumping.

I. Indian Industry interest.

70. The purpose of anti dumping duties in general is to eliminate dumping which is causing injury to the domestic industry and to re-establish a situation of open and fair competition in the Indian market, which is in the general interest of the country.

71 The Authority recognizes that the imposition of anti dumping duties might affect the price levels of the products manufactured using subject goods and consequently might have some influence on relative competitiveness of these products. However, fair competition on the Indian market will not be reduced by the anti dumping measures. On the contrary, imposition of anti dumping measures would remove the unfair advantages gained by dumping practices, would prevent the decline of the domestic industry and help maintain availability of wider choice to the consumers of subject goods. It is noted that the imposition of anti dumping measures would not restrict imports from subject countries in any way, and therefore, would not affect the availability of the product to the consumers. The consumers could still maintain two or even more sources of supply.

#### Injury margin

72. The Authority notes that injury margin in the case of Saudi Arabia is negative and therefore no Anti dumping duty is proposed for imports from Saudi Arabia.

#### J. CONCLUSIONS:

73. The Authority has, after considering the foregoing, come to the conclusion that:

- A. The subject goods have been exported to India from the EU and Saudi Arabia below its normal value. As stated earlier, dumping margin in the case of imports from Korea RP is negative.
- B. The Domestic Industry has suffered material injury;
- C. The injury has been caused by the dumped imports from European Union. The injury margin in the case of imports from Saudi Arabia is negative.

74. The Authority proposes to recommend the amount of anti dumping duty equal to the margin of dumping or less, which if levied, would remove the injury to the domestic industry. For the purpose of determining injury, the landed value of imports is proposed to be compared with the non-injurious price of the petitioner company determined for the period of investigation. The Authority further notes that injury margin in the case of Saudi Arabia is negative and therefore, no anti dumping duty is proposed for imports from Saudi Arabia. The Authority considers it necessary, therefore, to impose an anti dumping duty on all imports of PVC Paste Resin from European Union in order to remove the injury to the domestic industry. The margin of dumping determined by the Authority is indicated in the paragraphs above.

75. Accordingly, the Authority recommends that the definitive anti dumping duties be imposed from the date of notification to be issued in this regard by the Central Government on all imports of

PVC Paste Resin falling under Custom Heading 39042110 originating in or exported from European Union. In view of the wide fluctuations in the prices of the subject goods in the international markets, the Authority has deemed it fit to propose the Anti dumping duty on a reference price basis. The Anti-Dumping duty shall be the difference between the amount mentioned in column 9 of the following table and the landed value of imports per MT to be imposed from the date of Notification to be issued in this regard by the Central Government on all the imports of subject goods falling under Chapter 39 of the Customs Tariff, originating in or exported from the European Union

TABLE

S.No	Sub heading or Tarrif Item	Description of goods	Specificat ion	Country of origin	Country /Territor y of export	Produc er	Exporter	Amount	Unit of Measur ement	Curren cy
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11
1	39042110	PVC Paste Resin	Any Specificat ion	EU	Any	Any	Any exporter	950.94	MT	US Dollar
2	39042110	PVC Paste Resin	Any Specificat ion	Any	EU	Any	Any exporter	950.94	MT	US Dollar

76. Landed value of imports for the purpose shall be the assessable value as determined by the Customs under the Customs Act, 1962 and all duties of customs except duties under sections 3, 3A, 8B, 9 and 9A of the Customs Tariff Act, 1975.

77. An appeal against this order shall lie before the Customs Excise and Service Tax Appellate tribunal, in accordance with the Act.

78. The Authority may review the need for continuation, modification or termination of the definitive measures, as recommended herein, from time to time, as per the relevant provisions of the Act, and public notices issued in this respect from time to time. No request for such a review shall be entertained by the Authority unless the same is filed by an interested party within the time limit stipulated for this purpose.

ABHIJIT SENGUPTA, Designated Authority